لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अहमदियत का पैग़ाम

लेखक

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद

ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय[रज़ि.]

अहमदियत का पैग़ाम

लेखक
सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय रज़ि॰

नाम पुस्तक : अहमदियत का पैग़ाम
Name of book : Ahmadiyyat Ka Paigam
लेखक : हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय[रज़ि॰]
Writer : Hazrat Mirza Bashiruddin Mehmood Ahmad Khalifatul Masih II (Razi)
अनुवादक : डॉ अन्सार अहमद, पी एच. डी., आनर्स इन अरबिक
Translator : Dr Ansar Ahmad, Ph. D, Hons in Arabic
टाइप, सैटिंग : नईम उल हक़ कुरैशी मुरब्बी सिलसिला
Type, Setting : Naeem Ul Haque Qureshi Murabbi silsila
संस्करण, वर्ष : प्रथम संस्करण (हिन्दी) 2018 ई॰
Edition, Year : 1st Edition (Hindi) 2018
संख्या, Quantity: 1000
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, ज़िला-गुरदासपुर
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian Distt. Gurdaspur (Punjab)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम-व अला अब्दिहिल मसीहिल मौऊद

ख़ुदा के फ़ज़्ल और रहम के साथ

हुवन्नासिर

अहमदियत का पैग़ाम (सन्देश)

अहमदियत क्या है और किस उद्देश्य से इसको स्थापित किया गया है? यह एक प्रश्न है जो बहुत से परिचित और अपरिचित लोगों के दिलों में पैदा होता है। ज्ञानवनों का अध्ययन अधिक गहरा होता है और अनभिज्ञों के प्रश्न बहुत सतही होते हैं। ज्ञान के अभाव के कारण बहुत सी बातें वे अपने विचार से बना लेते हैं तथा बहुत सी बातों पर लोगों से सुन सुना कर विश्वास कर लेते हैं। मैं पहले उन्हीं लोगों को बताने के लिए कुछ बातें कहना चाहता हूँ जो ज्ञान के अभाव के कारण अहमदियत के बारे में विभिन्न प्रकार की ग़लत धारणाओं में ग्रस्त हैं।

अहमदियत कोई नया धर्म नहीं -

इन अज्ञानी लोगों में से कुछ लोग यह समझते हैं कि अहमदी लोग

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

(ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह) को नहीं मानते और अहमदियत एक नया धर्म है। ये लोग या तो कुछ दूसरे लोगों के बहकाने से यह आस्था रखते हैं या उनके मस्तिष्क यह विचार करके

कि अहमदियत एक धर्म है तथा प्रत्येक धर्म के लिए किसी कलिमः की आवश्यकता है समझ लेते हैं कि अहमदियों का भी कोई नया कलिमः है परन्तु वास्तविकता यह है कि न अहमदियत कोई नया धर्म है और न धर्म के लिए किसी कलिमः की आवश्यकता होती है बल्कि इस से बढ़कर मैं यह कहता हूँ कि कलिमः इस्लाम के अतिरिक्त किसी धर्म का निशान नहीं। जिस प्रकार इस्लाम दूसरे धर्म से अपनी किताब की दृष्टि से श्रेष्ठतर है अपने नबी की दृष्टि से श्रेष्ठतर है, अपनी सार्वभौमिकता की दृष्टि से श्रेष्ठतर है, इसी प्रकार इस्लाम कलिमः की दृष्टि से अन्य धर्मों से भी श्रेष्ठतर है। अन्य धर्मों के पास किताबें हैं परन्तु अल्लाह का कलाम मुसलमानों के अतिरिक्त किसी को नहीं मिला। किताब के मायने केवल लेख के हैं कर्त्तव्यों के हैं, आदेशों के हैं परन्तु किताब के अर्थ में यह बात कदापि सम्मिलित नहीं कि उसके अन्दर वर्णित लेख का एक-एक शब्द ख़ुदा तआला की ओर से हो। किन्तु इस्लामी किताब का नाम कलामुल्लाह (ख़ुदा का कलाम या वाणी) रखा गया। अर्थात् उसका एक-एक शब्द भी ख़ुदा तआला का वर्णन किया हुआ है, जिस प्रकार उसका लेख ख़ुदा तआला का वर्णन किया हुआ है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की किताब का लेख वही था जो ख़ुदा तआला ने वर्णन किया था। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वह शिक्षा जो दुनिया के सामने वह प्रस्तुत करते थे वही थी जो ख़ुदा तआला ने उनको दी थी परन्तु उन शब्दों में न थी जो ख़ुदा तआला ने प्रयोग किए थे। तौरात, इंजील और क़ुर्आन को पढ़ने वालों का ध्यान यदि इस लेख की ओर फेर दिया जाए तो दस मिनट के अध्ययन के पश्चात् ही यह निर्णय कर लेगा कि तौरात और इंजील के लेख चाहे ख़ुदा तआला की ओर से हों उनके शब्द ख़ुदा तआला की ओर से नहीं। और इसी प्रकार वह यह भी निर्णय कर लेगा कि पवित्र

क़ुर्आन के लेख भी ख़ुदा तआला की ओर से हैं और उसके शब्द भी ख़ुदा तआला की ओर से हैं। या यों कह लो कि एक ऐसा व्यक्ति जो पवित्र क़ुर्आन, तौरात और इंजील पर ईमान नहीं रखता इन तीनों किताबों का कुछ मिनट अध्ययन करने के पश्चात् इस बात का इक़रार करने पर विवश होगा कि तौरात और इंजील को प्रस्तुत करने वाले यद्यपि इस बात के दावेदार हैं कि ये दोनों बातें ख़ुदा तआला की ओर से हैं परन्तु इस बात के दावेदार कदापि नहीं कि इन दोनों किताबों का एक-एक शब्द ख़ुदा तआला का बोला हुआ है परन्तु पवित्र क़ुर्आन के बारे में वह यह कहने पर मज्बूर होगा कि इसका प्रस्तुत करने वाला न केवल इस बात का दावेदार है बल्कि इस बात का भी दावेदार है कि पवित्र क़ुर्आन का एक-एक शब्द ख़ुदा तआला की ओर से है। यही कारण है कि पवित्र क़ुर्आन ने अपना नाम किताबुल्लाह के अतिरिक्त कलामुल्लाह भी रखा है, परन्तु तौरात तथा इंजील ने अपना नाम कलामुल्लाह नहीं रखा न पवित्र क़ुर्आन ने उनको कलामुल्लाह कहा है। अतः मुसलमान श्रेष्ठतर हैं दूसरे धर्मों से इस बात में कि दूसरे धर्मों की धार्मिक किताबें किताबुल्लाह तो हैं परन्तु कलामुल्लाह नहीं। किन्तु मुसलमानों की किताब न केवल यह की किताबुल्लाह बल्कि कलामुल्लाह भी है।

इसी प्रकार सभी धर्मों का प्रारंभ नबियों के द्वारा हुआ है परन्तु कोई धर्म भी ऐसा नहीं जिस ने ऐसे नबी को प्रस्तुत किया हो जो समस्त धार्मिक मामलों की हिकमतों का वर्णन करने का दावेदार हो और जिस मानव जाति के लिए उत्तम आदर्श के तौर पर प्रस्तुत किया गया हो। ईसाइयत जो सब से निकट का धर्म है वह तो मसीह को अल्लाह का बेटा ठहरा कर इस योग्य ही नहीं छोड़ती कि कोई मनुष्य उसके पद-चिन्हों पर चले क्योंकि मनुष्य ख़ुदा जैसा नहीं हो सकता। तौरात हज़रत

मूसा अलैहिस्सलाम को उत्तम आदर्श के तौर पर प्रस्तुत नहीं करती। न तौरात और इंजील हज़रत मूसा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को धार्मिक हिकमतों को वर्णन करने का उत्तरदायी ठहरती हैं। परन्तु पवित्र क़ुर्आन मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में फ़रमाता है- وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ "यह नबी तुम्हें ख़ुदा के आदेश और उसकी हिकमतें बताता है।" अतएव इस्लाम श्रेष्ठतर है इस बात में कि उसका नबी दुनिया के लिए उत्तम आदर्श भी है और जब्र से अपने आदेश नहीं मनवाता बल्कि जब कोई आदेश देता है तो अपने अनुयायियों के ईमानों को सुदृढ़ करने और उनके जोश को बढ़ाने के लिए यह भी बताता है कि उसने जो आदेश दिए हैं उनके अन्दर उम्मत के लोगों के लिए तथा शेष मानव जाति के लिए क्या-क्या लाभ छुपे हुए हैं। इसी प्रकार इस्लाम श्रेष्ठतर है दूसरे धर्मों से अपनी शिक्षा की दृष्टि से, इस्लाम की शिक्षा छोटे-बड़े, ग़रीब-अमीर, स्त्री-पुरुष, पूर्वी-पश्चिमी, निर्बल-शक्तिशाली, हाकिम-प्रजा, मालिक-मज़दूर, पति-पत्नी, माता-पिता तथा सन्तान, विक्रेता-क्रेता, पड़ोसी और यात्री सब के लिए आराम, अमन तथा उन्नति का संदेश है। वह मानवजाति में से किसी गिरोह को अपने संबोधन से वंचित नहीं करती। वह अगली और पिछली समस्त क़ौमों के लिए एक हिदायतनामः (अनुदेश पत्र) है। जिस प्रकार अन्तर्यामी ख़ुदा की दृष्टि पत्थरों के नीचे पड़े हुए कणों पर भी पड़ती है और आकाश में चमकने वाले नक्षत्रों पर भी, इसी प्रकार मुसलमानों की धार्मिक शिक्षा ग़रीब से ग़रीब और कमज़ोर से कमज़ोर इन्सानों की आवश्यकताओं को भी पूरा करती है और अमीर से अमीर तथा शक्तिशाली से शक्तिशाली मनुष्यों की आवश्यकताओं को भी दूर करती है। तो इस्लाम केवल पहले धर्मों की एक नक़ल नहीं

बल्कि वह धर्म की श्रंखला की अन्तिम कड़ी और आध्यात्मिक व्यवस्था (रूहानी निज़ाम) का सूर्य है और उसकी किसी बात से अन्य धर्मों का अनुमान लगाना ठीक नहीं। धर्म के नाम में निस्सन्देह सभी भागीदार हैं उसी प्रकार जिस प्रकार हीरा और कोयला कार्बन के नाम में भागीदार हैं, परन्तु हीरा हीरा ही है और कोयला कोयला ही है। जिस प्रकार पत्थर का नाम कंकरीले पत्थर और संगमर्मर दोनों पर बोला जा सकता है परन्तु कंकरीला पत्थर कंकरीला पत्थर ही है और संगमर्मर संगमर्मर ही है। तो यह सोच लेना कि चूँकि इस्लाम में कलिमः पाया जाता है इसलिए शेष धर्मों का भी कलिमः होता होगा यह केवल अनभिज्ञता का परिणाम है। इस से अधिक अन्याय यह है कि कुछ लोगों ने तो ला इलाहा इल्लल्लाह ईसा रसूलुल्लाह और ला इलाहा इल्लल्लाह ईसा रूहुल्लाह के कलिमे भी प्रस्तुत कर दिए हैं और कहा है कि ये पहले धर्मों के कलिमे हैं। हालाँकि तौरात और इंजील तथा ईसाई लिटरेचर में इन कलिमों का कहीं नामो निशान नहीं। मुसलमानों में आज हज़ारों खराबियां पैदा हो चुकी हैं परन्तु क्या वे अपना कलिमः भूल गए हैं? फिर यह किस प्रकार कहा जा सकता है कि ईसाई और यहूदी अपना कलिमः भूल गए हैं। यदि वे अपना कलिमः भूल गए हैं और उनकी किताबों से भी ये कलिमे लुप्त हो गए हैं तो मुसलमानों को ये कलिमे किस ने बताए हैं। सच तो यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अतिरिक्त किसी अन्य नबी का कलिमः नहीं था। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विशेषताओं में से एक विशेषता यह भी है कि समस्त नबियों में से केवल आप को कलिमः मिला है अन्य किसी नबी को कलिमः नहीं मिला। इस का कारण यह है कि कलिमः में रिसालत के इक़रार को तौहीद (एकेश्वरवाद) के इक़रार के साथ मिला दिया गया है और तौहीद का

इक़रार एक अनश्वर सच्चाई है जो कभी मिट नहीं सकती। चूँकि पहले नबियों की नुबुव्वत के युग ने किसी न किसी समय समाप्त हो जाना था इसलिए ख़ुदा तआला ने उन में से किसी नबी के नाम को अपने नाम के साथ मिलाकर वर्णन नहीं किया, परन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत ने चूँकि क़यामत तक चलते चले जाना था और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का युग कभी समाप्त नहीं होना था इसलिए अल्लाह तआला ने आपके और आपके नाम को तौहीद के कलिमः के साथ मिलाकर वर्णन किया ताकि दुनिया को यह बता दे कि जिस प्रकार لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ (ला इलाहा इल्लल्लाह) कभी नहीं मिटेगा इसी प्रकार مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ (मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह) भी कभी नहीं मिटेगा। आश्चर्य है कि यहूदी नहीं कहता कि मूसा अलैहिस्सलाम का कोई कलिमः था, ईसाई नहीं कहता कि ईसा अलैहिस्सलाम का कोई कलिमः था, परन्तु मुसलमान जिसके नबी की कलिमः विशेषता थी, जिसके नबी को अल्लाह तआला ने कलिमः से विशिष्ट किया था जिसको कलिमः के माध्यम से अन्य क़ौमों पर श्रेष्ठता दी गई वह बहुत दिल खोल कर अपने नबी की इस श्रेष्ठता को अन्य नबियों में बांटने के लिए तैयार हो जाता है और जबकि अन्य नबियों की अपनी उम्मतें किसी कलिमः की दावेदार नहीं यह उनकी ओर से कलिमः बना कर स्वयं प्रस्तुत कर देता है कि यहूदियों का यह कलिमः था और इब्राहीमियों का यह।

सारांश यह कि हर धर्म के लिए कलिमः का होना आवश्यक नहीं। यदि आवश्यक होता तो भी अहमदियत के लिए कोई नया कलिमः नहीं हो सकता था, क्योंकि अहमदियत कोई नया धर्म नहीं। अहमदियत केवल इस्लाम का नाम है। अहमदियत केवल उसी कलिमः पर ईमान रखती है जिसको मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुनिया के

सामने प्रस्तुत किया था अर्थात्

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

(ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह) अहमदियत के नज़दीक इस भौतिक संसार का पैदा करने वाला एक ख़ुदा है जो भागीदार-रहित, एक है जिसकी शक्तियों और ताकतों का कोई अन्त नहीं जो रब्ब (प्रतिपालक) है, रहमान (कृपालु) है, रहीम (दयालु) है, मालिके यौमिद्दीन है (प्रतिफल एवं दण्ड के दिन का मालिक) है (फ़ातिहा – 4) उसके अन्दर वे समस्त विशेषताएं पाई जाती हैं जो पवित्र क़ुर्आन में वर्णन हुई हैं और वह उन समस्त बातों से पवित्र है जिन बातों से पवित्र क़ुर्आन ने उसे पवित्र ठहराया है और अहमदियों के नज़दीक मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुलमुत्तलिब कुरैश मक्की सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के रसूल थे और सब से अन्तिम शरीअत आप पर उतरी। आप ग़ैर अरबी, और अरबी गोरे और काले, समस्त क़ौमों और समस्त नस्लों की ओर भेजे गए। आपकी नुबुव्वत का युग नुबुव्वत के दावे से लेकर उस समय तक फैला हुआ है जब तक कि दुनिया के पर्दे पर कोई प्राणी जीवित है। आपकी शिक्षा पर प्रत्येक इन्सान के लिए अमल करना आवश्यक है तथा कोई इन्सान ऐसा नहीं जिस पर समझाने का अंतिम प्रयास पूर्ण हो गया हो और वह आप पर ईमान न लाया हो। प्रत्येक व्यक्ति जिस पर आपका नाम पहुंचा और जिसके सामने आपकी सच्चाई के तर्क वर्णन किए गए वह आप पर ईमान लाने के लिए बाध्य है और आप पर ईमान लाये बिना वह मुक्ति का अधिकारी नहीं तथा सच्ची पवित्रता केवल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही के पदचिन्हों पर चल कर प्राप्त हो सकती है।

अहमदियों के संबंध में कुछ संदेहों का निवारण

ख़तमे नुबुव्वत के बारे में अहमदियों की आस्था -

उपरोक्त जानकारी न रखने वाले गिरोह में से कुछ लोग यह भी सोचते हैं कि अहमदी ख़तमे नुबुव्वत को नहीं मानते और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन नहीं मानते। यह केवल धोखे और जानकारी न होने का परिणाम है। जब अहमदी स्वयं को मुसलमान कहते हैं और शहादत के कलिमः पर विश्वास रखते हैं तो यह क्योंकर हो सकता है कि वह ख़तमे नुबुव्वत के इन्कारी हों और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन न मानें। पवित्र क़ुर्आन में स्पष्ट तौर पर अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنۡ رِّجَالِكُمۡ وَلٰكِنۡ رَّسُوۡلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ

(अलअहज़ाब – 41)

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम में से किसी पुरुष के पिता न हैं न भविष्य में होंगे, परन्तु अल्लाह तआला के रसूल और ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं। पवित्र क़ुर्आन पर ईमान रखने वाला आदमी इस आयत का कैसे इन्कार कर सकता है। अतः अहमदियों की यह आस्था कदापि नहीं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नऊज़ुबिल्लाह ख़ातमुन्नबिय्यीन नहीं थे। जो कुछ अहमदी कहते हैं वह केवल यह है कि ख़ातमुन्नबिय्यीन के वे अर्थ जो इस समय मुसलमानों में प्रचलित हैं न तो पवित्र क़ुर्आन की उपरोक्त आयत पर चरितार्थ होते हैं और न उन

से रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सम्मान तथा शान उस प्रकार प्रकट होती है जिस सम्मान और शान की ओर इस आयत में संकेत किया गया है तथा अहमदी जमाअत ख़ातमुन्नबिय्यीन के वह अर्थ करती है जो सामान्य तौर पर अरबी शब्दकोश में पाए जाते हैं। और जिन अर्थों को हज़रत आइशा[रज़ि॰] और हज़रत अली[रज़ि॰] तथा कुछ दूसरे सहाबा समर्थन करते हैं जिन से रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान और आप का सम्मान बहुत बढ़ जाता है तथा समस्त मानव जाति पर आप की श्रेष्ठता सिद्ध होती है। तो अहमदी ख़त्मे नुबुव्वत के इन्कारी नहीं, बल्कि ख़त्मे नुबुव्वत के उन अर्थों के इन्कारी हैं जो सामान्य मुसलमानों में वर्तमान युग में ग़लती से प्रचलित हो गए हैं अन्यथा ख़त्मे नुबुव्वत का इन्कार तो कुफ्र है और अहमदी ख़ुदा के फ़ज़्ल से मुसलमान हैं तथा इस्लाम पर चलना ही मुक्ति (नजात) का एक मात्र माध्यम समझते हैं।

इन ही अनभिज्ञ लोगों में से कुछ लोग यह विचार करते हैं कि अहमदी पवित्र क़ुर्आन पर पूरा ईमान नहीं रखते, बल्कि केवल कुछ सिपारों को मानते हैं। अतः मुझे कुछ समय पहले ही क्वेटा में दर्जनों लोगों ने मिल कर बताया कि अहमदी सम्पूर्ण क़ुर्आन को नहीं मानते। यह भी एक झूठा आरोप है जो अहमदियत के शत्रुओं ने अहमदियत पर लगाया है। अहमदियत पवित्र क़ुर्आन को एक परिवर्तित न होने वाली तथा निरस्त न होने वाली किताब ठहराती है। अहमदियत बिस्मिल्लाह के 'ब' से लेकर वन्नास के 'स' तक प्रत्येक अक्षर और प्रत्येक शब्द को ख़ुदा तआला की ओर से समझती तथा पालन करने योग्य स्वीकार करती है।

अहमदियों की फरिश्तों के बारे में आस्था -

इन्हीं अज्ञानी लोगों में से कुछ लोग यह आरोप लगाते हैं कि

अहमदी फ़रिश्तों और शैतान के क़ायल नहीं। यह आरोप भी केवल आरोप है। फ़रिश्तों की चर्चा भी पवित्र क़ुर्आन में मौजूद है और शैतान की चर्चा भी पवित्र क़ुर्आन में मौजूद है। जिन चीज़ों की चर्चा पवित्र क़ुर्आन में मौजूद है पवित्र क़ुर्आन पर ईमान का दावा करते हुए इन चीज़ों का इन्कार अहमदियत कर ही किस प्रकार सकती है। हम ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से फ़रिश्तों पर पूरा ईमान रखते हैं, बल्कि अहमदियत से जो बरकतें हमें प्राप्त हुई हैं उनके कारण न केवल यह कि हम फ़रिश्तों पर ईमान लाते हैं बल्कि हम यह भी विश्वास रखते हैं, कि फरिश्तों के साथ पवित्र क़ुर्आन की सहायता से संबंध पैदा किया जा सकता है और उन से रूहानी विद्याएँ भी सीखी जा सकती हैं।

लेखक ने स्वयं कई विद्याएँ फ़रिश्तों से सीखीं। मुझे एक बार एक फ़रिश्ते ने सूरह फ़ातिहा की तफ़्सीर पढ़ाई और उस समय से लेकर इस समय तक सूरह फ़ातिहा के मुझ पर इतने मतलब खुले हैं कि उनकी कोई सीमा नहीं, और मेरा दावा है कि किसी धर्म या समुदाय का आदमी रूहानी विद्याओं में से किसी विषय के बारे में भी जो कुछ अपनी पूरी किताब में से निकाल सकता है उस से बढ़कर विषय ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से मैं केवल सूरह फ़ातिहा में से निकाल सकता हूँ। बड़े लम्बे समय से मैं दुनिया को यह चेलेन्ज दे रहा हूँ परन्तु आज तक किसी ने उस चेलेन्ज को स्वीकार नहीं किया। ख़ुदा तआला के अस्तित्त्व का सबूत, ख़ुदा की तौहीद का सबूत रिसालत और उसकी आवश्यकता, सर्वांगपूर्ण शरीअत के लक्षण तथा मानव जाति के लिए उसकी आवश्यकता, दुआ, तक़्दीर (प्रारब्ध) हश्र-व-नश्र (क़यामत के दिन हिसाब के लिए मुर्दों को उठाना) स्वर्ग, नर्क, इन समस्त विषयों पर सूरह फ़ातिहा से ऐसा प्रकाश पड़ता है कि अन्य किताबों के सैकड़ों पृष्ठ भी मनुष्य को इतना प्रकाश

नहीं पहुंचाते। तो फ़रिश्तों के इन्कार का तो कोई प्रश्न ही नहीं। अहमदी तो फ़रिश्तों से लाभ उठाने के भी दावेदार है। शेष रहा शैतान, तो शैतान तो एक गन्दी चीज़ है उस पर ईमान लाने का तो कोई प्रश्न ही नहीं। हाँ उसके अस्तित्त्व का ज्ञान हमें पवित्र क़ुर्आन से से प्राप्त होता है और हम उसके अस्तित्त्व को स्वीकार करते हैं और न केवल स्वीकार करते हैं बल्कि यह भी समझते हैं कि ख़ुदा तआला ने हमारे ज़िम्मे यह कार्य लगाया है कि हम शैतान की शक्ति को तोड़ें और उसकी हुकूमत को मिटायें। मैंने शैतान को भी स्वप्न में देखा है और एक बार तो मैंने उस से कुश्ती ही की है तथा ख़ुदा तआला की सहायता से और तअव्वुज़ के शब्दों की बरकत से उसे पराजित भी किया है। और एक बार अल्लाह तआला ने मुझे बताया कि जिस कार्य के लिए तुम नियुक्त किए जाओगे उसके मार्ग में शैतान और उसकी सन्तान बहुत सी रोकें डालेगी तुम उसकी रोकों की परवाह न करना। और यह वाक्य कहते हुए बढ़ते चले जाना कि "ख़ुदा के फ़ज़्ल और रहम के साथ"। तब मैं उस दिशा की ओर चला जिस दिशा की ओर जाने का ख़ुदा तआला ने मुझे आदेश दिया था। मैंने देखा कि शैतान और उसकी सन्तान विभिन्न तरीकों से मुझे डराने और धमकाने की कोशिश करने लगे। कुछ स्थानों पर केवल सर ही सर सामने आ जाते थे और मुझे डराने की कोशिश करते थे। कुछ स्थानों पर केवल धड़ आ जाते थे, कुछ स्थानों पर शैतान शेरों तथा चीतों का रूप धारण कर के या हाथियों के रूप में आता था परन्तु ख़ुदा के आदेश के अधीन मैंने उसकी ओर कोई ध्यान न दिया और यही कहते हुए बढ़ता चला गया कि

"ख़ुदा के फ़ज़्ल और रहम के साथ,
ख़ुदा के फ़ज़्ल और रहम के साथ"

जब कभी मैं यह वाक्य पढ़ता था शैतान और उसकी सन्तान भाग जाती थी और मैदान साफ़ हो जाता था परन्तु थोड़ी देर के बाद वह पुनः एक नए रूप और नई सूरत में मेरे सामने आता था। परन्तु इस बार भी वही दाव उसके मिटाने में सफल हो जाता था, यहाँ तक की अभीष्ट मंज़िल आ गयी और शैतान पूर्ण रूप से मैदान छोड़ कर भाग गया। इसी स्वप्न के आधार पर मैं अपने समस्त लेखों पर हैडिंग से ऊपर "ख़ुदा के फ़ज़्ल और रहम के साथ" का वाक्य लिखता हूँ। अतः हम फ़रिश्तों पर ईमान रखते हैं और शैतान के अस्तित्त्व को स्वीकार करते हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि अहमदी लोग चमत्कारों के इन्कारी हैं यह भी घटनाओं के विरुद्ध है। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चमत्कार तो अलग रहे हम तो इस बात के भी काइल हैं कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चे अनुयायी को भी अल्लाह तआला चमत्कार प्रदान करता है। पवित्र क़ुर्आन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चमत्कारों से भरा हुआ है और उन का इन्कार केवल एक जन्मजात अंधा ही कर सकता है।

नजात (मुक्ति) के बारे में अहमदियों की आस्था -

कुछ लोग अहमदियत के बारे में इस ग़लत धारणा में ग्रस्त हैं कि अहमदिया आस्था के अनुसार अहमदियों के अतिरिक्त शेष सब लोग जहन्नुमी (नारकी) हैं। यह भी केवल अज्ञानता या शत्रुता का परिणाम है। हमारी हरगिज़ यह आस्था नहीं कि अहमदियों के अतिरिक्त शेष सभी लोग जहन्नुमी हैं। हमारे नज़दीक यह हो सकता है कि कोई अहमदी हो परन्तु वह जहन्नुमी भी हो जाए, जिस प्रकार यह भी हो सकता है कि कोई अहमदी न हो और वह जन्नत (स्वर्ग) में चल जाए। क्योंकि जन्नत

केवल मुंह के इक़रार का परिणाम नहीं। जन्नत बहुत सी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के परिणामस्वरूप मिलती है इसी प्रकार दोज़ख़ (नर्क) केवल मुंह के इक़रार का परिणाम नहीं, बल्कि दोज़ख़ का शिकार बन्ने के लिए बहुत सी शर्तें हैं। कोई मनुष्य दोज़ख़ में नहीं जा सकता जब तक उस पर समझाने का अंतिम प्रयास पूर्ण न हो चाहे वह बड़ी से बड़ी सच्चाई ही का इन्कारी क्यों न हो। स्वयं रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि बचपन में मर जाने वाले या ऊंचे पर्वतों में रहने वाले या जंगल में रहने वाले या इतने बूढ़े जिनकी समझ मारी गई हो या पागल जो बुद्धि से खाली हों उन लोगों की गिरफ़्त नहीं होगी, बल्कि ख़ुदा तआला क़यामत के दिन उन लोगों की ओर दोबारा नबी भेजेगा और उन्हें सच तथा झूठ को पहचानने का अवसर दिया जाएगा। तब जिस पर समझाने का अंतिम प्रयास पूर्ण हो चुका होगा वह दोज़ख़ (नर्क) में जाएगा और जो हिदायत को स्वीकार करेगा वह जन्नत में जाएगा। तो यह ग़लत है कि अहमदियों के नज़दीक हर वह व्यक्ति जो सच्चाई के समझने से विमुख होता है और यह कोशिश करता है कि सच्चाई उसके कान में न पड़े ताकि उसे स्वीकार न करनी पड़े या जिस पर समझाने का अंतिम प्रयास पूरा हो जाए परन्तु फिर भी ईमान न लाये ख़ुदा तआला के नज़दीक गिरफ़्त के योग्य है। परन्तु यदि ऐसे व्यक्ति को भी ख़ुदा तआला चाहे तो माफ़ कर सकता है। उसकी रहमत (दया) का वितरण हमारे हाथ में नहीं। एक दास अपने मालिक को दान करने से नहीं रोक सकता। ख़ुदा तआला हमारा मालिक है तथा हमारा बादशाह है और हमारा पैदा करने वाला है और हमारा स्वामी है, यदि उसकी हिकमत और उसका ज्ञान तथा उसकी रहमत किसी ऐसे व्यक्ति को भी माफ़ करना चाहे जिसकी सामान्य हालतों के अनुसार

माफ़ी असंभव दिखाई दी हो तो हम कौन हैं जो उसके हाथ को रोकें और हम कौन हैं जो उसको माफ़ करने से रोकें।

नजात के बारे में तो अहमदियत की आस्था इतनी विशाल है कि उसके कारण कुछ मौलवियों ने अहमदियों पर कुफ्र का फ़त्वा लगाया है। अर्थात् हम लोग यह आस्था रखते हैं कि कोई इन्सान भी हमेशा के (अनश्वर) अज़ाब में ग्रस्त नहीं होगा। न मोमिन न काफिर। क्योंकि पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़रमाता है

(आराफ़ - 157) وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ

मेरी रहमत ने हर चीज़ को घेरा हुआ है। और फिर फ़रमाता है

(अत्तकासुर - 10) فَأُمُّهٗ هَاوِيَةٌ

काफिर और दोज़ख़ (नर्क) का संबंध ऐसा होगा जैसे स्त्री और उसके बच्चे का होता है और फिर फ़रमाता है कि -

(अज़्ज़ारियात - 57) وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ

समस्त जिन्नों और इन्सानों को मैंने अपना अब्द बनाने के लिए पैदा किया है। इन तथा ऐसी ही बहुत सी आयातों के होते हुए हम क्योंकर मान सकते हैं कि ख़ुदा तआला की रहमत अन्ततः जहन्नुमियों को नहीं ढांप लेगी और जहन्नुम के रहम से कभी भी बाहर नहीं निकलेगा और वे बंदे जिनको ख़ुदा तआला ने अपना अब्द (सेवक) बनाने के लिए पैदा किया था वे अनश्वर तौर पर शैतान के अब्द रहेंगे और ख़ुदा तआला के अब्द नहीं बनेंगे और ख़ुदा तआला की मुहब्बत भरी आवाज़ कभी भी उन्हें संबोधित करके यह नहीं कहेगी कि

(अलफ़ज्र - 30,31) فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ

मेरे बन्दों में दाखिल होकर मेरी जन्नत में दाख़िल हो जाओ!

अहमदियों का हदीसों पर ईमान -

कुछ लोग इस भ्रम में ग्रस्त है कि अहमदी हदीसों को नहीं मानते और कुछ लोग यह आरोप लगाते है कि अहमदी फ़िक: के इमामों को नहीं मानते। ये दोनों बातें ग़लत हैं। अहमदियत अनुकरण करने या न करने के बारे में मध्य-मार्ग अपनाती है। अहमदियत की शिक्षा यह है कि जो बात मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सिद्ध हो उसके बाद किसी अन्य इन्सान की आवाज़ को सुनना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विषय और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दास हैं। उनका समस्त सम्मान मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आज्ञापालन करने में था और उनकी समस्त प्रतिष्ठा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गुलामी में थी। तो जब कोई बात रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सिद्ध हो जाए और उसका लक्षण यह है कि वह जो कथन रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर सम्बद्ध किया जाए पवित्र क़ुर्आन के अनुसार हो तो वह बात एक अन्तिम फैसला है। एक न टलने वाला आदेश है और कोई व्यक्ति इस बात का अधिकार नहीं रखता कि उस आदेश को अस्वीकार कर दे या उसके विरुद्ध ज़ुबान खोले। परन्तु चूँकि हदीस के रावी (रिवायत करने वाले) इन्सान हैं और उनमें नेक भी हैं और बुरे भी हैं और अच्छे स्मरण-शक्ति वाले भी हैं और बुरी स्मरण-शक्ति वाले भी हैं तथा अच्छी बुद्धि वाले भी हैं और मंद बुद्धि वाले भी हैं। यदि कोई ऐसी हदीस हो जिसका अर्थ पवित्र क़ुर्आन के विरुद्ध हो तो चूँकि हर एक हदीस अटल नहीं बल्कि स्वयं हदीस के इमामों की मान्यताओं के अनुसार कुछ हदीसें अटल हैं, कुछ सामान्य श्रेणी की हैं कुछ संदिग्ध तथा काल्पनिक हैं तथा कुछ बनावटी हैं। इसलिए पवित्र क़ुर्आन जैसी अटल

किताब की तुलना में जो हदीस आ जाएगी उसको स्वीकार नहीं किया जाएगा। परन्तु जहाँ पवित्र क़ुर्आन का भी कोई स्पष्ट आदेश मौजूद न हो और हदीस भी ऐसे माध्यमों से सिद्ध न हो जो विश्वास और अटलपन तक पहुंचाते हों या हदीस के शब्द ऐसे हों कि उन से कई अर्थ निकल सकते हों तो उस समय निस्सन्देह फ़िक: के इमाम जिन्होंने अपनी उम्रें पवित्र क़ुर्आन एवं हदीसों पर विचार एवं चिन्तन करने में व्यय कर दी हैं विवेचना करने के अधिकारी हैं और एक देहाती आदमी जिसने न क़ुर्आन पर विचार किया है न हदीस पर विचार किया है या जिसका ज्ञान और शैक्षिक स्तर इस योग्य ही नहीं है कि वह विचार कर सके उसका अधिकार ही नहीं कि वह यह कहे कि इमाम अबू हनीफ़ा[रह॰] या इमाम अहमद[रह॰] या इमाम शाफ़िई[रह॰] या इमाम मालिक[रह॰] या अन्य धार्मिक इमामों को क्या अधिकार है कि उनकी बात को मुझ से अधिक महत्त्व दिया जाए। मैं भी मुसलमान हूँ और वे भी मुसलमान। यदि एक देहाती आदमी और एक डाक्टर का रोग के बारे में मतभेद हो तो एक डाक्टर की राय को प्रधानता दी जाएगी और कानून में मतभेद हो तो एक वकील की राय को ग़ैर वकील की राय पर प्रधानता (तर्जीह) दी जाती है। फिर क्या कारण है कि धार्मिक मामलों में उन इमामों की राय को प्रधानता न दी जाए जिन्होंने अपनी उम्रें पवित्र क़ुर्आन और हदीस पर विचार करने में व्यय कर दी हों और जिनकी मानसिक शक्तियाँ भी और दूसरे लाखों मनुष्यों से अच्छी हों और जिन के संयम तथा जिन की पवित्रता पर ख़ुदाई आचरण ने मुहर लगा दी हो।

अत: अहमदियत न पूर्ण रूप से अहले हदीस का समर्थन करती है और न पूर्ण रूप से मुक़ल्लिदों का समर्थन करती है। अहमदियत की सीधी-सादी आस्था इस बारे में वही है जो हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा[रह॰]

की थी कि पवित्र क़ुर्आन सब से प्राथमिक है इस से नीचे सही हदीसें हैं और उस से नीचे विषय के माहिरों का तर्क तथा विवेचना है। इसी आस्था के अनुसार अहमदी स्वयं को कभी हनीफ़ा[रह॰] भी कहते हैं जिसके मायने यह भी होते हैं कि इमाम अबू हनीफ़ा[रह॰] ने जो धर्म असल वर्णन किया है हम उसको सही मानते हैं और कभी अहमदी स्वयं को अहले हदीस भी कह देते हैं क्योंकि अहमदियत के नज़दीक मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन जो सिद्ध और स्पष्ट हो समस्त मानवजाति के कथनों पर श्रेष्ठता रखता है।

अहमदियों की तक़्दीर (प्रारब्ध) के बारे में आस्था –

उन ग़लत धारणाओं में से जो अनभिज्ञों को जमाअत अहमदिया के बारे में हैं एक ग़लत धारणा यह भी है कि अहमदी लोग तक़्दीर के इन्कारी हैं अहमदी लोग तक़्दीर के हरगिज़ इन्कारी नहीं। हम लोग इस बात को मानते हैं कि ख़ुदा तआला की तक़्दीर इस दुनिया में जारी है और कयामत तक जारी रहेगी और उसकी तक़्दीर को कोई बदल नहीं सकता। हम केवल इस बात के विरुद्ध हैं कि चोर की चोरी, बेनमाज़ी के नमाज़ छोड़ने, झूठे के झूठ, धोखेबाज़ के धोखे, क़ातिल के क़त्ल और दुष्कर्मी के दुष्कर्म को ख़ुदा तआला की ओर सम्बद्ध किया जाए और अपने मुंह का काला होने को ख़ुदा तआला के मुंह पर मलने की कोशिश की जाए, हमारे नज़दीक अल्लाह तआला ने इस दुनिया में तक़्दीर और तदबीर (उपाय) की दो नहरें एक समय में चलाई हैं और

بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ (अर्रहमान -21)

के आदेशानुसार उन के बीच एक ऐसी आड़ निर्धारित कर दी है कि यह कभी आपस में टकराती नहीं। तदबीर (उपाय) का मैदान अपने

स्थान पर है। जिन मामलों के बारे में ख़ुदा तआला ने अपनी तक़्दीर को अनिवार्य ठहराया है उन में तदबीर कुछ नहीं कर सकती जिन मामलों में उस ने तदबीर का मार्ग खोला है उनमें तक़्दीर पर आशा लगा कर बैठे रहना अपने भविष्य को स्वयं तबाह करना है। तो हम जिस बात के विरोधी हैं वह यह है कि मनुष्य अपने दुष्कर्मों को तक़्दीर के पर्दे में छुपाने की कोशिश करे और अपने आलस्य एवं लापरवाहियों का वैध होना तक़्दीर के शब्द से निकाले और जहाँ ख़ुदा तआला ने तदबीर का आदेश दिया है वहां तक़्दीर पर आशा लगाए बैठा रहे, क्योंकि उसका परिणाम हमेशा ख़तरनाक निकलता है। मुसलमान ख़ुदाई तक़्दीर पर नज़र रख कर बैठे रहे और उस प्रयास एवं तक़्दीर को त्याग दिया जो क़ौमी उन्नति के लिए आवश्यक होती है उसका परिणाम यह हुआ की वे धर्म से तो गए थे दुनिया से भी गुज़र गए। यदि वे इस बात को ध्यान में रखते कि जिन कार्यों के लिए ख़ुदा तआला ने तदबीर का दरवाज़ा खोला है उनमें तक़्दीर को दृष्टिगत रखने की बजाए तदबीर को दृष्टिगत रखना चाहिए तो उनकी हालत इतनी न गिरती और वे इतनी बुरी हालत में न होते जितने कि अब हैं।

अहमदियों की जिहाद के बारे में आस्था –

अहमदियत के बारे में जो ग़लत फ़हमियां हैं उनमें से एक यह भी है कि अहमदी जिहाद के इन्कारी हैं। अहमदी जिहाद के इन्कारी नहीं अहमदियों की आस्था केवल यह है कि युद्ध दो प्रकार के होते हैं। एक जिहाद तथा एक केवल युद्ध। जिहाद केवल उस युद्ध को कहते हैं जिसमें धर्म को बचाने के लिए लड़ाई की जाए और ऐसे शत्रुओं का मुकाबला किया जाए जो धर्म को तलवार के बल पर मिटाना चाहते हैं।

और जो खंजर की नोक पर आस्था परिवर्तित करवाना चाहते है। यदि दुनिया में ऐसी घटनाएँ प्रकट हों तो जिहाद हर मुसलमान पर अनिवार्य हो जाता है। परन्तु ऐसे जिहाद के लिए एक शर्त यह भी है कि इस जिहाद की घोषणा इमाम की ओर से होनी चाहिए ताकि मुसलमानों को मालूम हो सके कि उन में से किन-किन को जिहाद में सम्मिलित होना चाहिए और किन-किन को अपनी बारी की प्रतीक्षा करनी चाहिए। यदि ऐसा न हो तो वही मुसलमान गुनाहगार होगा जिसको जिहाद के लिए बुलाया जाए और वह न आए। जब अहमदी जमाअत किसी देश में जिहाद का इन्कार करती थी तो इसलिए करती थी कि धर्म को तलवार के बल पर परिवर्तित कराने की कोशिश अंग्रेज़ नहीं कर रहे थे। यदि अहमदी जमाअत का यह विचार ग़लत था और वास्तव में अंग्रेज़ तलवार द्वारा धर्म को परिवर्तित कराने की कोशिश कर रहे थे तो फिर निस्सन्देह जिहाद आवश्यक था। परन्तु प्रश्न यह कि क्या जिहाद के आवश्यक हो जाने के बाद हर मुसलमान ने तलवार उठाकर अंग्रेज़ का मुकाबला किया? यदि नहीं किया तो अहमदी तो ख़ुदा तआला को यह उत्तर देंगे कि हमारे नज़दीक अभी जिहाद का समय नहीं आया था, यदि हमने ग़लती की तो हमारी ग़लती विवेचनात्मक थी, परन्तु इन के विरोधी मौलवी क्या उत्तर देंगे। क्या वे यह कहेंगे कि हे ख़ुदा! जिहाद का समय तो था और हम विश्वास रखते थे कि यह जिहाद का समय है और हम समझते थे कि जिहाद अनिवार्य हो गया है परन्तु हे हमारे ख़ुदा! हमने जिहाद नहीं किया क्योंकि हमारे दिल डरते थे और न हमने उन लोगों को जिहाद के लिए आगे भिजवाया जिनके दिल नहीं डरते थे क्योंकि हम डरते थे कि ऐसा करने से भी अंग्रेज़ हम को पकड़ लेंगे। मैं यह फैसला न्याय निष्ठ लोगों पर ही छोड़ता हूँ कि इन दोनों उत्तरों में से कौन सा उत्तर ख़ुदा तआला

के नज़दीक अधिक स्वीकारणीय है?

अब तक तो जो कुछ मैंने कहा वह उन लोगों के भ्रमों को दूर करने के लिए कहा है जो अहमदियत का सरसरी अध्ययन भी नहीं रखते और जो अहमदियत के सन्देश के उसके शत्रुओं से सुनने या अहमदियत का अध्ययन किए बिना अपने दिलों से अहमदियत की आस्थाओं तथा अहमदियत की शिक्षा बनाना चाहते हैं। अब मैं उन लोगों को संबोधित करना चाहता हूँ जिन्होंने अहमदियत का एक सीमा तक अध्ययन किया है और जो जानते हैं कि अहमदी ख़ुदा तआला की तौहीद पर विश्वास रखते हैं। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत पर भी विश्वास रखते हैं, रोज़े भी रखते हैं, हज भी करते हैं, ज़कात भी देते हैं, हश्र-व-नश्र, प्रतिफल एवं दण्ड पर भी ईमान रखते हैं परन्तु वे हैरान हैं कि जब अहमदी दूसरे मुसलमानों की तरह हैं तो फिर इस नए फ़िर्क़े को क़ायम करने की आवश्यकता क्या है? उनके नज़दीक अहमदियों की आस्था तथा अहमदियों का अमल ऐतराज़ योग्य नहीं परन्तु उनके नज़दीक एक नई जमाअत बनाना ऐतराज़ योग्य बात है, क्योंकि जब अन्तर कोई नहीं तो अलग करने का कारण क्या हुआ और जब मतभेद नहीं तो दूसरी मस्जिद बनाने का उद्देश्य क्या हुआ?

नई जमाअत बनाने का कारण

इस प्रश्न का उत्तर दो प्रकार से दिया जा सकता है बौद्धिक तौर पर तथा रूहानी तौर पर। बौद्धिक तौर पर इस प्रश्न का उत्तर यह है कि जमाअत केवल एक संख्या का नाम नहीं। हज़ार, लाख या करोड़ लोगों को जमाअत नहीं कहते बल्कि जमाअत उन लोगों के समूह को कहते हैं जो संयुक्त होकर कार्य करने का निर्णय कर चुके हों और एक संयुक्त

प्रोग्राम के अनुसार कार्य कर रहे हों। ऐसे लोग यदि पांच-सात भी हों तो जमाअत है और जिन में यह बात न हो वह करोड़ों भी जमाअत नहीं। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब मक्का में नुबुव्वत का दावा किया तो पहले दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर केवल चार आदमी ईमान लाये थे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पांचवें थे। पांच होने के बावजूद आप एक जमाअत थे। परन्तु मक्का की आठ-दस हज़ार की आबादी जमाअत नहीं थी न अरब की आबादी जमाअत थी। क्योंकि न उन्होंने संयुक्त होकर कार्य करने का निर्णय किया था और न उनका संयुक्त प्रोग्राम था। तो इस प्रकार का प्रश्न करने से पहले यह देखना चाहिए कि क्या इस समय मुसलमान कोई जमाअत हैं? क्या दुनिया के मुसलमान समस्त मामलों में परस्पर मिलकर कार्य करने का निर्णय कर चुके हैं या उनका कोई संयुक्त प्रोग्राम है? जहाँ तक हमदर्दी का प्रश्न है मैं मानता हूँ कि मुसलमानों के दिलों में एक-दूसरे के बारे में हमदर्दी है परन्तु वह भी समस्त मुसलमानों में नहीं। कुछ के दिलों में है और कुछ के दिलों में नहीं और फिर कोई ऐसी व्यवस्था मौजूद नहीं जिसके द्वारा मतभेद को मिटाया जा सके। मतभेद तो जमाअत में भी होते हैं और बल्कि नबियों के समय की जमाअत में भी होता है। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में भी कभी अन्सार और मुहाजिरों का मतभेद हो गया और कभी कुछ अन्य क़बीलों में मतभेद हो गया परन्तु जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमा दिया तो उस समय सब मतभेद मिट गया। इसी प्रकार ख़िलाफ़त के दिनों में भी मतभेद पैदा हो जाता था, परन्तु जब कोई मतभेद पैदा होता ख़लीफ़े फैसला करते और वह मतभेद मिट जाता। ख़िलाफ़त के समाप्त होने के बाद भी लगभग सत्तर वर्ष मुसलमान एक हुकूमत के अधीन

जहाँ-जहाँ भी मुसलमान थे वे एक व्यवस्था के अधीन थे। वह व्यवस्था अच्छी थी या बुरी थी बहरहाल उसने मुसलमानों को एक रिश्ते से बाँध रखा था। इसके बाद मतभेद हुआ और मुसलमान दो गिरोहों में विभाजित हो गए। स्पेन का एक गिरोह बन गया और शेष दुनिया का एक गिरोह बन गया। यह मतभेद तो था परन्तु बहुत ही सीमित मतभेद था। दुनिया के मुसलमानों का अधिकांश भाग फिर भी एक व्यवस्था के अधीन चल रहा था। परन्तु तीन सौ वर्ष गुज़रने के पश्चात् यह व्यवस्था ऐसी टूटी कि समस्त मुसलमानों में मतभेद पैदा हो गया। और उनमें बिखराव एवं अस्त व्यस्तता पैदा हो गई। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि

خَيْرُ الْقُرُوْنِ ثُمَّ الَّذِيْنَ يَلُوْنَهُمْ ثُمَّ الَّذِيْنَ يَلُوْنَهُمْ ثُمَّ يَفْشُوْا الْكَذِبُ۔

(तिरमिज़ी अब्वाबुश्शहादत - हदीस 2303)

सब से अच्छी सदी मेरी है उनसे उतर कर वे लोग होंगे जो दूसरी सदी में होंगे और उनसे उतर कर वे लोग होंगे जो तीसरी सदी में होंगे। फिर दुनिया में से सच्चाई मिट जाएगी और अन्याय तथा अत्याचार और मतभेद का प्रचलन हो जायेगा और ऐसा ही हुआ, और फिर यह मतभेद बढ़ता चला गया, यहाँ तक कि गत तीन सदियों में तो मुसलमान अपनी शक्ति बिल्कुल ही खो बैठे। कहाँ वह समय था कि यूरोप एक-एक मुसलमान बादशाह से डरता था और अब यूरोप तथा अमरीका की एक-एक शक्ति का मुकाबला करने की शक्ति समस्त इस्लामी जगत में भी नहीं। यहूदियों की कितनी छोटी सी हुकूमत फिलस्तीन में बनी है। शाम, इराक़, लबनान, सऊदी अरब, मिस्र और फिलस्तीन की सेनाएं उसका मुकाबला कर रही हैं। परन्तु वास्तविकता यह है कि यू.एन.ओ. ने जो

क्षेत्र यहूदियों को दिया था उस से बहुत अधिक इस समय यहूदियों के कब्ज़े में है। यह सही है कि यहूदी हुकूमत की सहायता अमरीका और इंग्लैण्ड कर रहे हैं परन्तु प्रश्न भी तो यही है कि कभी तो मुसलमानों की एक-एक हुकूमत समस्त पश्चिम पर विजयी थी और अब पश्चिम की कुछ हुकूमतें समस्त मुसलामनों से अधिक शक्तिशाली हैं। अतः जमाअत का जो अर्थ है इस समय उसके अनुसार मुसलमानों की कोई जमाअत नहीं। हुकूमतें हैं जिनमें से सब से बड़ी पाकिस्तान की हुकूमत है जो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से स्थापित हुई है। परन्तु इस्लाम पाकिस्तान का नाम नहीं। न इस्लाम मिस्र का नाम है। न इस्लाम शाम का नाम है। न इस्लाम ईरान का नाम है। न इस्लाम अफ़गानिस्तान का नाम है। न इस्लाम सऊदी अरब का नाम है। इस्लाम तो उस एकता के रिश्ते का नाम है जिसने समस्त मुसलमानों को संयुक्त कर दिया था, और इस समय दुनिया मैं ऐसी कोई व्यवस्था मौजूद नहीं। पाकिस्तान को अफ़गानिस्तान से हमदर्दी है, अफ़गानिस्तान को पाकिस्तान से हमदर्दी है, परन्तु न पाकिस्तान अफ़गानिस्तान की हर बात मानने के लिए तैयार है न अफ़गानिस्तान पाकिस्तान की हर बात मानने के लिए तैयार है। दोनों की राजनीति अलग-अलग है और दोनों अपने आन्तरिक मामलों में आज़ाद हैं। यही हाल लोगों का है। अफ़गानिस्तान के निवासी अपने स्थान पर आज़ाद हैं, पाकिस्तान के नागरिक अपने स्थान पर आज़ाद है, मिस्र के निवासी अपने स्थान पर आज़ाद हैं उनको एक लड़ी में पिरोने वाली कोई चीज़ नहीं। तो इस समय मुसलमान भी हैं, मुसलामानों की हुकूमतें भी हैं और उनमें से कुछ हुकूमतें ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से सुदृढ़ हो रही हैं परन्तु फिर भी मुसलमान एक जमाअत नहीं। मान लो पाकिस्तान का बेड़ा इतना सुदृढ़ हो जाए कि सम्पूर्ण हिन्द महासागर में हुकूमत करने लग

जाए, उसकी सेना इतनी शक्तिशाली हो जाए कि दुनिया की मण्डियों पर उसका क़ब्ज़ा हो जाए बल्कि उसकी शक्ति इतनी बढ़ जाए कि अमरीका की शक्ति से भी बढ़ जाए तो क्या ईरान, शाम, मिस्र, फिलस्तीन अपने आप को पाकिस्तान में जोड़ने के लिए तैयार हो जायंगे? स्पष्ट है कि नहीं वे पाकिस्तान की श्रेष्ठता का इकरार करने के लिए तैयार होंगे, वे उससे हमदर्दी करने के लिए तैयार होंगे परन्तु वे अपने अस्तित्त्व (संप्रभुता) को उस में मिटा देने के लिए तैयार नहीं होंगे। तो यद्यपि ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से मुसलमानों की राजनीतिक स्थिति अच्छी हो रही है और कुछ नई इस्लामी हुकूमतें स्थापित हो रही हैं परन्तु इसके बावजूद समस्त संसार के मुसलमानों को एक इस्लाम की जमाअत नहीं कह सकते, क्योंकि वे विभिन्न राजनीतियों में बटे हुए हैं और अलग-अलग हुकूमतों में विभाजित हैं। उन सब की आवाज़ को एक जगह जमा कर देने वाली कोई शक्ति नहीं। परन्तु इस्लाम तो विश्वव्यापी होने का दावा करता है। इस्लाम अरब के मुसलमानों का नाम नहीं, इस्लाम शाम के मुसलमानों का नाम नहीं, इस्लाम ईरान के मुसलामानों का नाम नहीं, इस्लाम अफ़गानिस्तान के मुसलमानों का नाम नहीं। जब दुनिया के हर देश के मुसलमान इस्लाम के नाम के नीचे एकत्र हो जाते हैं तो इस्लाम की जमाअत वही हो सकती है जो इन समस्त गिरोहों को इकट्ठा करने वाली हो और जब तक ऐसी जमाअत दुनिया में क़ायम न हो हम यह कहने पर विवश हैं कि इस समय मुसलमानों की कोई जमाअत नहीं, यद्यपि हुकूमत है और राजनीति है। इसी प्रकार संयुक्त प्रोग्राम का प्रश्न है। जहाँ ऐसा कोई प्रबंध नहीं जो समस्त संसार के मुसलामानों को इकठ्ठा कर सके वहां मुसलमानों का कोई संयुक्त प्रोग्राम भी नहीं। न राजनीतिक, न सभ्यता संबंधी न धार्मिक। अद्वितीय तौर पर किसी-किसी जगह किसी मुसलमान का इस्लाम के

शत्रुओं से मुकाबला कर लेना यह और चीज़ है तथा संयुक्त तौर पर एक विशिष्ट व्यवस्था के अधीन चारों ओर से शत्रुओं के आक्रमण का निरीक्षण कर के उसके मुकाबले की कोशिश करना यह अलग बात है। तो प्रोग्राम की दृष्टि से भी मुसलमान एक जमाअत नहीं। ऐसी स्थिति में यदि कोई जमाअत स्थापित हो और आरोप कथित दोनों देशों को लेकर वे स्थापित हों तो उस पर यह ऐतराज़ नहीं किया जा सकता कि वे एक नई जमाअत बन गई है बल्कि यों कहना चाहिए कि पहले कोई जमाअत नहीं थी अब एक नई जमाअत बन गई है।

मैं उन दोस्तों से, जिनके दिलों में यह संदेह पैदा होता है कि एक एक क़िब्ल:, एक क़ुर्आन, एक रसूल होने के बावजूद फिर अहमदी जमाअत ने एक अलग जमाअत क्यों बनाई, कहता हूँ कि वे इस रहस्य पर विचार करें और सोचे कि इस्लाम को फिर एक जमाअत बनाने का समय आ चुका है। इस काम के लिए कब तक प्रतीक्षा की जाएगी? मिस्त्र की हुकूमत अपने स्थान पर अपना काम कर रही है, ईरान की हुकूमत अपने स्थान पर अपना काम कर रही है, अफ़गानिस्तान की हुकूमत अपने स्थान पर अपना काम कर रही है, अन्य इस्लामी हुकूमतें अपने-अपने स्थान पर अपना काम कर रही हैं, परन्तु उनकी मौजूदगी में भी एक रिक्त स्थान अभी शेष है, एक अभी शेष है और इसी रिक्त स्थान और कमी को पूरा करने के लिए अहमदिया जमाअत स्थापित हुई है।

जब तुर्की की ख़िलाफ़त को तुर्कों ने समाप्त कर दिया तो मिस्त्र के कुछ उलेमा ने (कुछ सरदारों के कथानुसार मिस्त्र के बादशाह के इशारे से) एक तहरीक-ए-ख़िलाफ़त आरंभ की और इस तहरीक से उसका उद्देश्य यह था कि मिस्त्र के बादशाह को मुसलमानों का ख़लीफ़ा समझ लिया जाए और इस प्रकार मिस्त्र को दूसरे देशों पर प्रधानता प्राप्त हो जाए। सऊदी

अरब ने इसका विरोध आरंभ किया और यह प्रोपोगेण्डा आरम्भ कर दिया कि यह तहरीक (अभियान) अंग्रेज़ों की उठायी हुई है। यदि कोई व्यक्ति ख़िलाफ़त का अधिकारी है तो वह सऊदी अरब का बादशाह है। जहाँ तक ख़िलाफ़त का संबंध है वह निस्सन्देह एक ऐसा रिश्ता है जिस से सब मुसलमान इकट्ठे हो जाते हैं, परन्तु जब यह ख़िलाफ़त का शब्द किसी विशेष बादशाह के साथ विशिष्ट होने लगा तो दूसरे बादशाह ने तुरन्त ताड़ लिया कि हमारी हुकूमत में बाधा डाली जाती है और वह लाभप्रद तहरीक बेकार होकर रह गई। परन्तु यदि यही तहरीक जन सामान्य में पैदा हो और उसके पीछे धार्मिक रूह काम कर रही हो तो उसके मार्ग में राजनीतिक डाह बाधक नहीं होगी, केवल जमाअती बाधा की स्थिति में वह किसी देश में सीमित नहीं रहेगी, हर देश में जाएगी और फैलेगी तथा अपनी जड़ें बनाएगी, बल्कि ऐसे देशों में भी जाकर सफल होगी जहाँ इसलामी हुकूमत नहीं होगी। क्योंकि राजनीतिक टकराव न होने के कारण प्रारंभिक युग में हुकूमतें इसका विरोध नहीं करेंगी। अतः अहमदियत का इतिहास इस बात का गवाह है। अहमदियत का उद्देश्य केवल मुसलमानों के अन्दर एकता पैदा करना था वह बादशाहत की अभिलाषी नहीं थी, वह हुकूमत की अभिलाषी नहीं थी। अंग्रेज़ों ने अपने देश में कभी अहमदियों को कष्ट भी दिए हैं परन्तु उसके शुद्ध तौर पर धार्मिक होने के कारण उस से स्पष्ट तौर पर टकराने की आवश्यकता नहीं समझी। अफ़गानिस्तान में मुल्लाओं से डर कर कभी बादशाह ने कठोरता भी दिखाई परन्तु व्यक्तिगत मुलाकातों में अपनी असमर्थताएँ भी व्यक्त करते रहे और शर्मिन्दगी भी व्यक्त करते रहे। इसी प्रकार अन्य इस्लामी देशों में जन सामान्य ने विरोध किया, उलेमा ने विरोध किया तथा उन से डर कर हुकूमत ने भी कभी रोकें डालीं, परन्तु किसी हुकूमत ने यह नहीं समझा कि यह तहरीक हमारी हुकूमत का तख़्ता

उलटने के लिए स्थापित हुई है और यह उनका विचार सही था।

अहमदियत को राजनीति से कोई मतलब नहीं अहमदियत केवल इस उद्देश्य के लिए स्थापित हुई है कि मुसलमानों की धार्मिक हालत को ठीक करे और उन्हें रिश्ते में पिरोए ताकि वह मिलकर इस्लाम के शत्रुओं का नैतिक एवं आध्यात्मिक (रूहानी) हथियारों से मुकाबला कर सकें। इसी बात को समझते हुए अमरीका में अहमदी प्रचारक गए। जिस सीमा तक वे एशियाइयों का विरोध करते हैं उन्होंने अहमदी प्रचारकों का विरोध किया परन्तु जहाँ तक धार्मिक तहरीक का प्रश्न था उसको ध्यान में रखते हुए उन्होंने विरोध नहीं किया। उच्च हुकूमत ने इण्डोनेशिया में भी इसी ढंग से काम किया। जब उन्होंने देखा कि यह राजनीति में हमारे साथ नहीं टकराते तो यद्यपि उन्होंने गुप्त तौर पर निगरानियाँ भी कीं उपेक्षाएं भी कीं परन्तु स्पष्ट तौर पर अहमदियत से टकराने की आवश्यकता नहीं समझी और इस आचरण में वे सर्वथा सच पर थे। बहरहाल हम उनके धर्म के विरुद्ध प्रचार करते थे। इसलिए हम उनसे किसी हमदर्दी के प्रत्याशी नहीं थे किन्तु हम सीधे तौर पर उनकी राजनीति से भी नहीं टकराते थे। इसलिए उनका भी यह कोई अधिकार नहीं था कि हम से सीधे तौर पर टकराते। इसका परिणाम यह हुआ कि अब जमाअत अहमदिया लगभग हर देश में स्थापित है। हिन्दुस्तान में भी, अफ़गानिस्तान में भी, ईरान में भी, इराक में भी, शाम में भी, फिलस्तीन में भी, मिस्र में भी, इटली में भी, स्विटज़रलैण्ड में भी, जर्मनी में भी, इंग्लैण्ड में भी, यूनाइटेड स्टेट्स अमरीका में भी, इण्डोनेशिया में भी, मलाया, ईस्ट और वेस्ट अफ्रीका, एबेसीनिया, अर्जेंटीना, यहाँ तक कि प्रत्येक देश में थोड़ी या बहुत जमाअत मौजूद है और इन देशों के मूल निवासीयों में से जमाअत मौजूद है। यह नहीं कि वहां के कुछ हिन्दुस्तानी अहमदी हो गए हैं। और वे ऐसे

निष्कपट लोग हैं कि अपने जीवन इस्लाम की सेवा के लिए क़ुर्बान कर रहे हैं। एक अंग्रेज़ लेफ्टिनेन्ट अपना जीवन समर्पित कर के इस समय प्रचारक के तौर पर इंग्लैण्ड में कार्य कर रहा है। नियमित रूप से नमाज़ पढ़ने वाला है, शराब इत्यादि के निकट नहीं जाता, स्वयं मेहनत मज़दूरी से पैसे कमा कर ट्रेक्ट इत्यादि प्रकाशित करता है या जल्से करता है। हम उसे गुज़ारा करने के लिए इतनी थोड़ी राशि देते हैं जिस से इंग्लैण्ड का सब से निचले स्तर का काम करने वाला भी अधिक कमाता है। इसी प्रकार जर्मनी के एक व्यक्ति ने जीवन समर्पित किया है। वह भी फ़ौजी अफ़सर है बड़ी दौड़-धूप से वह जर्मनी से निकलने में सफल हुआ। अभी सूचना आई है कि वह स्विटज़रलैंड पहुंच गया है और वहां वीज़े की प्रतीक्षा कर रहा है। यह नौजवान इस्लाम की सेवा का अपने दिल में बहुत जोश रखता है, इसलिए पाकिस्तान आ रहा है कि यहाँ से इस्लाम की शिक्षा पूर्ण रूप से प्राप्त कर के किसी अन्य देश में इस्लाम का प्रचार करे। जर्मनी का एक और युवक लेखक और उसकी शिक्षित पत्नी जीवन समर्पित करने का इरादा व्यक्त कर रहे हैं और शायद शीघ्र ही इस निर्णय पर पहुँच कर इस्लाम की शिक्षा प्राप्त करने के लिए पाकिस्तान आ जाएँगे। इसी प्रकार हालेंड का एक नौजवान इस्लाम के लिए अपना जीवन समर्पित करने का इरादा कर चुका है और शायद जल्द ही किसी न किसी देश में इस्लाम के प्रचार के कार्य पर लग जाएगा। निस्सन्देह जमाअत अहमदिया थोड़ी है परन्तु देखना यह है कि इसके द्वारा इस्लाम की जमाअत क़ायम हो रही है। हर देश में कुछ न कुछ लोग इसमें सम्मिलित होकर एक विषय-व्यापी एकता की बुनियाद रख रहे हैं और हर राजनीति के मानने वाले लोगों में से कुछ न कुछ आदमी इसमें सम्मिलित हो रहे हैं। ऐसी तहरीकों का प्रारंभ शुरू में छोटा

ही हुआ करता है परन्तु एक समय में जाकर वह एक तत्काल शक्ति प्राप्त कर लेती है और कुछ दिनों में एकता एवं सहमति का बीज बोने में सफल हो जाती है। स्पष्ट है कि राजनीतिक शक्ति के लिए राजनीतिक जमाअतों की आवश्यकता है। और धार्मिक एवं नैतिक शक्ति के लिए धार्मिक और नैतिक जमाअतों की आवश्यकता है। जमाअत अहमदिया राजनीति से इसलिए अलग रहती है कि यदि वह इन बातों में हस्तक्षेप करे तो वह अपने कार्य में सुस्त हो जाए।

जमाअत अहमदिया का प्रोग्राम

दूसरा प्रश्न प्रोग्राम का रहा। प्रोग्राम की दृष्टि से भी जमाअत अहमदिया ही एक संयुक्त प्रोग्राम रखती है। अन्य कोई जमाअत संयुक्त प्रोग्राम नहीं रखती। जमाअत अहमदिया ईसाइयत के आक्रमण का पूर्ण अनुमान लगा कर हर देश में उसका मुकाबला कर रही है। इस समय दुनिया का सब से कमज़ोर प्रदेश किसी दृष्टि से सब से शक्तिशाली प्रदेश अफ्रीका है। ईसाइयत ने इस समय अपनी पूरी शक्ति से अफ्रीका में धावा बोल दिया है। अब तो खुल्लम-खुल्ला वे अपने इन इरादों को अभिव्यक्त कर रहे हैं। इस से पूर्व केवल पादरियों का मस्तिष्क इस ओर जा रहा था, फिर इंग्लैण्ड की कंज़रवेटिव पार्टी✷ (CONSERVATIVE PARTY) इस ओर झुकी और अब तो लेबर पार्टी ने भी घोषणा कर

✷CONSERVATIVE PARTY इंग्लैण्ड की राजनीतिक पार्टी जो सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में टोरी पार्टी के स्थान पर सत्ता में आई। प्रारंभ में नाम 1830 में प्रसिद्ध हुआ। पार्टी में 1846ई में फूट पड़ी। 1874 से 1880ई से 1905ई तक (नियमित समय के अतिरिक्त) फिर इस पार्टी की सरकार रही। जोज़फ़ चेम्बरलीन के राजस्व संबंधी सुधारों के पश्चात् पार्टी अस्त-व्यस्त होने का शिकार हुई और

दी है कि यूरोप की मुक्ति का दारोमदार अफ्रीका की उन्नति और उसके संगठन पर है, परन्तु यूरोप समझता था कि यह उन्नति और संगठन इस रंग में यूरोप के लिए लाभप्रद हो सकता है जबकि इसके नागरिक ईसाई हो जाएँ। अहमदियत ने इस राज़ को चौबीस वर्ष पहले भांप लिया और चौबीस वर्ष पहले अपने प्रचारक वहां भिजवा दिए जहाँ हज़ारों लोग ईसाईयत से निकलकर मुसलमान हो गए और इस समय अफ्रीका में सबसे अधिक व्यवस्थित इस्लाम की जमाअत अहमदिया की जमाअत है जिसका मुकाबला करने से ईसाइयों ने बचना आरंभ कर दिया है और उनके लिट्रेचर में निरन्तर इस बात को अभिव्यक्त किया जा रहा है कि अहमदिया जमाअत की कोशिशों ने ईसाई मिशनरियों की कोशिशों को खण्डित कर दिया है। यह प्रचार का सिलसिला पूर्वी अफ्रीका में वर्षों से जारी है और यद्यपि वहां कार्य का प्रारंभ है। इस कारण परिणाम अभी इतने शानदार नहीं जितने पश्चिम अफ्रीका में है परन्तु फिर भी ईसाइयों में से कुछ लोग मुसलमान होना आरंभ हो गए हैं और आशा है कि कुछ वर्ष में यहाँ भी प्रचारकों की कोशिशें उच्चतम परिणाम पैदा करने लग जाएँगी। इण्डोनेशिया और मलाया में भी एक लम्बे समय से मिशन स्थापित है और इस्लाम के भागते हुए गिरोहों को, ठहराने, एकत्र करने तथा इकठ्ठा कर के शत्रु के मुकाबले पर खड़ा करने का प्रयास किया जा रहा है। संयुक्त

1914 ई तक लिबरल सरकार स्थापित रही। 1924 और 1929 ई में लेबर पार्टी की सफलता के अतिरिक्त 1922 ई से 1940 तक कुछ समय कंज़रवेटिव पार्टी छाई रही। द्वितीय विश्व युद्ध में CONSERVATIVE विन्सटन चर्चिल ने मिली जुली कैबिनेट बनाई। 1945 ई से 1951 ई में लेबर पार्टी की सरकार रही और चर्चिल की बागडोर के अन्तर्गत पुनः कंज़रवेटिव पार्टी के लोग सरकार के प्रमुख रहे।
(उर्दू जामिअ इनसाइक्लोपीडिया, जिल्द-2, लाहौर से प्रकाशित 1988 पृष्ठ1221)

राज्य अमरीका ईसाई शक्तियों में से अब सबसे आगे आ चुका है। वहां भी चौबीस वर्ष से अहमदी प्रचारक कार्य कर रहे हैं और अमरीका के हज़ारों नागरिक अहमदी हो चुके हैं और हज़ारों रुपया वार्षिक इस्लाम के प्रचार पर खर्च कर रहे हैं। अमरीका की दौलत की तुलना में यह कुछ भी नहीं और वहां के पादरियों की कोशिशों के सामने यह बिल्कुल तुच्छ कोशिश है, परन्तु प्रश्न तो यह है कि मुकाबला आरंभ कर दिया गया है और विजय हम को हो रही है। क्योंकि हम ईसाई जमाअत के आदमी छीन कर अपनी ओर ला रहे हैं। ईसाई जमाअत हमारे आदमी छीन कर नहीं ले जा रही। तो यह नहीं कहना चाहिए कि अहमदियत ने एक नई जमाअत क्यों स्थापित की है। कहना यह चाहिए कि अहमदियत ने एक जमाअत स्थापित कर दी जबकि इस से पहले कोई जमाअत नहीं थी और क्या यह आपत्तिजनक बात है या प्रशंसनीय बात है?

अहमदियों को अन्य जमाअतों से पृथक रखने का कारण

कुछ लोग कहते हैं कि ऐसी किसी जमाअत के बनाने की आवश्यकता क्या थी? यही बातें दूसरे मुसलमानों में फैलानी चाहिए थीं। इस का बौद्धिक उत्तर यह है कि एक कमाण्डर उन्हीं लोगों को लड़ाई में भेज सकता है जो फ़ौज में भर्ती हो चुके हों। जो लोग फ़ौज में भर्ती नहीं वह उनको किस प्रकार भेज सकता है? यदि जमाअत ही कोई नहीं बनाई जाती तो सिलसिला अहमदिया का प्रवर्तक किस से काम लेता तथा किस को आदेश देता। और उन के ख़लीफ़े किस से काम लेते और किस को आदेश देते। क्या वे बाज़ार में फिरना आरंभ करते और हर मुसलमान को पकड़ कर कहते कि आज अमुक स्थान पर इस्लाम के लिए आवश्यकता है तू वहां जा और वह आगे से यह उत्तर देता

कि मैं तो आप की बात मानने के लिए तैयार नहीं और फिर वे अगले आदमी को जा पकड़ते और फिर उससे अगले आदमी को जा पकड़ते। यह एक बौद्धिक वास्तविकता है कि जब कोई व्यवस्थित कार्य करना हो तो उसके लिए एक जमाअत की आवश्यकता होती है। ऐसी जमाअत के बिना कोई वास्तविक कार्य नहीं हो सकता, यदि कहो कि जमाअत तो बनाते परन्तु सब में मिले-जुले रहते। तो इसका उत्तर यह है कि जान को जोखों में डालने वाले कार्यों के लिए हर व्यक्ति कहाँ तैयार होता है। ऐसे कार्य तो पागल ही किया करते हैं और पागलों को होशियारों से अलग रखना होता है। यदि होशियार पागलों को भी अपने जैसा बना लेंगे तो फिर ऐसे कार्यों को कौन करेगा, तथा दूसरों से अलग रहना स्वयं स्वभावों में आश्चर्य पैदा करता है और स्वयं ही लोग उसे कुरेदना और जासूसी करना आरंभ करते हैं और अन्ततः एक दिन उसी चीज़ का शिकार हो जाते हैं जिसको मिटाने के लिए वे आगे बढ़ते हैं। तो समस्त आरोप विचार की कमी का परिणाम हैं। यदि बुद्धि से काम लिया जाए तो समझ आ सकता है कि वास्तव में यही तरीक़ा सही है जो अहमदियत ने ग्रहण किया है। इसी सही तरीके पर चल कर वह इस्लाम के लिए कुर्बानी करने वालों की एक जमाअत पैदा कर सकती है और जब तक वह इस तरीके पर चलती रहेगी दिन-प्रतिदिन ऐसे लोगों की संख्या को बढ़ाती चली जाएगी यहाँ तक कि कुफ्र महसूस करेगा कि अब इस्लाम शक्ति पकड़ गया है और वह इस्लाम पर अपनी पूरी शक्ति के साथ आक्रमण करेगा परन्तु आक्रमण का समय गुज़र चुका होगा। मैदान इस्लाम ही के हाथ रहेगा और कुफ्र पराजित हो जाएगा।

हम राजनीतिक प्रयास करने वालों के मार्ग में बाधा नहीं बनते। हम उनसे कहते हैं कि जब तक तुम्हारी समझ में हमारी बातें न आयें तुम

अपना कार्य करते चले जाओ। परन्तु हम उनसे यह भी चाहते हैं कि वे हमें अपने मार्ग से न रोकें। यदि किसी की समझ में उनका तरीक़ा अच्छा होता है तो वे उनसे जा मिले और यदि किसी की समझ में हमारा तरीक़ा अच्छा मालूम होता है तो वे हमसे आ मिले। उनके तरीके में कुर्बानी कम और प्रसिद्धि अधिक है और हमारे तरीके में कुर्बानी अधिक और प्रसिद्धि कम है। उनको उनका हिस्सा मिलता रहेगा और हमको हमारा हिस्सा मिलता रहेगा। जिन लोगों की दृष्टि में बुद्धि और वास्तविकता की दृष्टि से इस्लाम की स्थापना अधिक आवश्यक होगी हम में आ मिलेंगे और जो लोग भौतिक बादशाहत के प्रेमी होंगे वे उनसे जा मिलेंगे। परन्तु हम लड़ें क्यों और झगड़े क्यों? दोनों ही मिल्लत के नाम में तड़प रहे हैं, यद्यपि अलग-अलग अंगों में टीस उठ रही है। उनके मस्तिष्कों में दर्द है, हमारे दिल दु:ख पा रहे हैं। यह तो मैंने बौद्धिक दृष्टिकोण से उत्तर दिया है, अब मैं रूहानी दृष्टिकोण से उत्तर देता हूँ और मेरे नजदीक वही वास्तविक दृष्टिकोण है।

इस प्रश्न का रूहानी उत्तर यह है कि अल्लाह तआला की अनादि काल से सुन्नत यही है कि जब कभी दुनिया में ख़राबी फैल जाती है, रूहानियत उस से समाप्त हो जाती है, लोग दुनिया को दीन (धर्म) पर प्राथमिकता देने लग जाते हैं तो उस समय अल्लाह तआला अपने बन्दों की हिदायत और मार्ग-दर्शन के लिए आसमान से किसी मामूर को भेजता है ताकि उसके खोये हुए बन्दों को पुन: उसकी ओर वापस लाये और उसके भेजे हुए धर्म को पुन: दुनिया में स्थापित करे कभी ये मामूर शरीअत साथ लाते हैं और कभी किसी पहली शरीअत के स्थापित करने के लिए आते हैं। पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला की इस सुन्नत पर विशेष बल दिया गया है तथा मानव जाति को बार-बार

अल्लाह तआला के उस रहम और करम की पहचान की ओर ध्यान दिलाया गया है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि ख़ुदा तआला बहुत बड़ी शान रखता है और इन्सान उसके मुकाबले में एक कीड़े से भी निकृष्ट है परन्तु इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि अल्लाह तआला के समस्त कार्य हिकमत से भरपूर होते हैं और वह कोई कार्य भी अकारण और बेफायदा नहीं करता। अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ

(अद्दुख़ान – 39)

अर्थात् हम ने यह पृथ्वी और आकाश यों ही नहीं पैदा किए, बल्कि उनकी पैदायश में उद्देश्य रखा है और वह उद्देश्य यही है कि इन्सान ख़ुदा तआला की विशेषता को प्रकट करे और उसका द्योतक बन कर दुनिया के उन लोगों को जो ऊँचा उड़ने की शक्ति नहीं रखते ख़ुदा तआला से परिचय करे। सृष्टि के प्रारंभ से लेकर इस समय तक ख़ुदा तआला की यही सुन्नत जारी रही है और भिन्न-भिन्न समयों में ख़ुदा तआला ने अपने भिन्न-भिन्न द्योतक इस दुनिया में भेजे। कभी ख़ुदा तआला की विशेषताएं आदम अलैहिस्सलाम के द्वारा प्रदर्शित हुईं, कभी नूह अलैहिस्सलाम के द्वारा प्रदर्शित हुईं, कभी वे इब्राहीमी शरीर में से प्रकट हुईं तो कभी मूसवी शरीर से व्यक्त हुईं, कभी दाऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा तआला का चेहरा दुनिया को दिखाया तो कभी मसीह अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला के प्रकाशों को अपने अस्तित्त्व में व्यक्त किया। सबसे अन्त तथा सर्वांगपूर्ण तौर पर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह तआला की सम्पूर्ण विशेषताओं को संक्षिप्त और विस्तृत, व्यक्तिगत हैसियत से भी और सामूहिक हैसियत से भी ऐसी

शान और ऐसे प्रताप के साथ दुनिया पर प्रकट किया कि पहले अंबिया आप के सूरज जैसे अस्तित्त्व के सामने सितारों के समान शिथिल पड़ गए। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद समस्त शरीअतें समाप्त हो गईं और समस्त शरीअत लाने वाले नबियों के आगमन का मार्ग बन्द कर दिया गया। किसी जम्बादारी के कारण नहीं, किसी रियायत के कारण नहीं बल्कि इसलिए कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसी शरीअत लाये जो समस्त आवश्यकताओं की संग्रहीता और समस्त आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाली थी। जो चीज़ ख़ुदा तआला की ओर से आने वाली थी वह तो पूरी हो गई परन्तु बन्दों के बारे में कोई गारन्टी नहीं थी कि वे सही मार्ग को नहीं छोड़ेंगे और उस सच्ची शिक्षा को नहीं भूलेंगे। बल्कि पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला ने स्पष्ट तौर पर फ़रमाया था कि –

يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِىْ
يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗۤ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ (अस्सज्दह – 6)

अर्थात् अल्लाह तआला अपने इस अन्तिम कलाम और अपनी इस अन्तिम शरीअत को आकाश से पृथ्वी पर स्थापित कर देगा और लोगों का विरोध उसके मार्ग में रोक नहीं बनेगा। परन्तु फिर एक समय के पश्चात् यह कलाम आकाश पर चढ़ना आरंभ होगा तथा एक हज़ार वर्ष में यह दुनिया से उठ जाएगा। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस धर्म की स्थापना के युग को तीन सौ वर्ष का समय ठहराते हैं जैसा कि ऊपर हदीस वर्णन की जा चुकी है और पवित्र क़ुर्आन भी الٓمّرٰ (अलिफ़ लाम मीम रा) के द्वारा 271 वर्ष का समय इस युग को ठहराता है। इसके साथ-साथ हज़ार वर्ष तक धर्म के आकाश पर चढ़ने के समय को मिलाया जाए 1271 होता है जैसे

दुनिया से इस्लाम की रूह के लुप्त हो जाने का समय पवित्र क़ुर्आन के अनुसार 1271 वर्ष है या तेरहवीं शताब्दी (हिज्री) का अन्त। जैसा कि पवित्र क़ुर्आन से ज्ञात होता है। ऐसे समय में ख़ुदा तआला की ओर से अवश्य एक हादी और मार्ग प्रदर्शक आया करता है ताकि दुनिया हमेशा के लिए शैतान के क़ब्ज़े में न चली जाए और ख़ुदा तआला की हुकूमत अनश्वर तौर पर दुनिया से मिट न जाए। तो आवश्यक था कि इस युग में ख़ुदा तआला की ओर से कोई व्यक्ति आता वह कोई होता परन्तु आना आवश्यक था। यह किस प्रकार हो सकता था कि आदम अलैहिस्सलाम के अनुयायियों में जब कभी खराबी पैदा हुई तो ख़ुदा तआला ने उनकी खबर ली, नूह अलैहिस्सलाम के अनुयायियों में जब कभी खराबी पैदा हुई तो ख़ुदा तआला ने उनकी खबर ली, इब्राहीम अलैहिस्सलाम के अनुयायियों में जब कभी खराबी पैदा हुई तो ख़ुदा तआला ने उनकी खबर ली, मूसा अलैहिस्सलाम के अनुयायियों में जब कभी खराबी पैदा हुई तो ख़ुदा तआला ने उनकी खबर ली, ईसा अलैहिस्सलाम के अनुयायियों में जब कभी खराबी पैदा हुई तो ख़ुदा तआला ने उनकी खबर ली। किन्तु नबियों के सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत में खराबी पैदा हो तो ख़ुदा तआला उसकी खबर न ले। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के बारे में तो यह भविष्यवाणी थी कि छोटी-छोटी खराबियों को दूर करने के लिए आप की उम्मत में हर सदी के सर पर एक मुजद्दिद अवतरित हुआ करेगा। क्या कोई बुद्धि इसको स्वीकार कर सकती है कि छोटी-छोटी खराबियों को दूर करने के लिए तो ख़ुदा तआला की ओर से मुजद्दिद प्रकट होते रहें, जैसे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते है कि

اِنَّ اللّٰہَ یَبۡعَثُ لِھٰذِہِ الۡاُمَّۃِ عَلٰی رَأۡسِ کُلِّ مِئَۃِ سَنَۃٍ مَّنۡ یُّجَدِّدُلَھَا دِیۡنَھَا

(अबू दाऊद किताबुल मलाहिम बाब मा युज़्करो फ़ी कर्निलमिअतिन.)

परन्तु इस बहुत बड़े फ़ित्ने के अवसर पर जिसके बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि जबसे दुनिया में नबी आने लगे हैं वे इस फ़ित्ने की खबर देते चले आए हैं। कोई मामूर न आए, कोई हादी न आए, कोई पथ-प्रदर्शक न आए मुसलमानों को सच्चे धर्म पर एकत्र करने के लिए ख़ुदा तआला की ओर से कोई आवाज़ बुलन्द की जाए, मुसलमानों को अंधकार और तिमिर (तारीकी) के गढ़े में से निकालने के लिए आकाश से कोई हस्ती न गिराई जाए। वह ख़ुदा जो संसार के प्रारंभ से अपनी दया और कृपा के नमूने दिखाता चला आया है मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अवतरित होने के बाद उसकी दया के दायरे में अधिक जोश पैदा हो गया है कि उसकी दया और कृपा मिट गए हैं। यदि ख़ुदा तआला कभी भी दयालु था तो उम्मते मुहम्मदिया के लिए उसको पहले से अधिक दयालु होना चाहिए। और निस्सन्देह वह ऐसा ही है। पवित्र क़ुर्आन और हदीसें इस पर गवाह हैं कि उम्मते मुहम्मदिया में जब कभी खराबी पैदा होगी ख़ुदा तआला अपनी ओर से हादी और पथ-प्रदर्शक भिजवाता रहेगा विशेष तौर पर उस अंतिम युग में जबकि दज्जाल का फ़ित्न: प्रकट होगा, ईसाइयत विजयी हो जाएगी। इस्लाम बाह्य तौर पर पराजित हो जाएगा और मुसलमान धर्म को छोड़ बैठेंगे तथा दूसरी क़ौमों के रीति-रिवाजों को अपना लेंगे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक पूर्ण द्योतक प्रकट होगा और युग का सुधार करेगा जिसके बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि

لَا يَبْقٰى مِنَ الْاِسْلَامِ اِلَّا اِسْمُهٗ وَلَا يَبْقٰى مِنَ الْقُرْاٰنِ اِلَّا رَسْمُهٗ

(कन्ज़ुल उम्माल जिल्द-11, पृष्ठ-181, प्रकाशित – हलब 1974)

अर्थात् इस्लाम का केवल नाम शेष रह जाएगा और क़ुर्आन केवल लिखा हुआ रह जाएगा। इस्लाम का मग्ज़ कहीं दिखाई नहीं देगा और क़ुर्आन के अर्थ किसी पर स्पष्ट न होंगे। अतः हे प्रियजनो! सिलसिला अहमदिया की स्थापना इस अनादि सुन्नत के अन्तर्गत हुई है और उन्हीं भविष्यवाणियों के अनुसार हुई है जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के पहले नबियों ने इस युग के बारे में वर्णन की हैं। यदि मिर्ज़ा साहिब का चयन इस कार्य के लिए उचित न था तो यह ख़ुदा तआला पर आरोप है। मिर्ज़ा साहिब का इसमें क्या दोष है। परन्तु यदि ख़ुदा तआला अन्तर्यामी है और कोई राज़ उससे छुपा हुआ नहीं और उसके समस्त कार्य हिकमतों से भरे हुए होते हैं तो फिर समझ लेना चाहिए कि मिर्ज़ा गुलाम अहमद अलैहिस्सलातो वस्सलाम का चयन ही सही चयन था और उन्हीं के मानने में मुसलमानों और दुनिया कि भलाई है। आप दुनिया के लिए कोई नया सन्देश नहीं लाये परन्तु वही सन्देश जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुनिया को सुनाया था परन्तु दुनिया उसे भूल गई, वही सन्देश जो पवित्र क़ुर्आन ने प्रस्तुत किया था परन्तु दुनिया ने उसकी ओर से मुंह मोड़ लिया और वह यही सन्देश है कि सम्पूर्ण कायनात (ब्रह्माण्ड) का पैदा करने वाला एक ख़ुदा है, उसने इन्सान को अपने प्रेम और संबंध के लिए पैदा किया है। अपनी विशेषताओं को उसके माध्यम से प्रकट करने के लिए उसे बनाया है, जैसा कि वह फ़रमाता है

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً

(अलबक़रह – 31)

तो आदम अलैहिस्सलाम और उसकी नस्ल ख़ुदा तआला की ख़लीफ़ा अर्थात् उसकी प्रतिनिधि है। वह ख़ुदा तआला की विशेषताओं को दुनिया पर प्रकट करने के लिए पैदा की गई है। अतः समस्त मानव जाति का यह कर्त्तव्य है कि वे अपने जीवन को ख़ुदा तआला की विशेषताओं के अनुसार बनायें और जिस प्रकार एक प्रतिनिधि अपने समस्त कार्यों में अपने मुवक्किल की ओर बार-बार ध्यान देता है और एक दास हर नया क़दम उठाने से पहले अपने मालिक की ओर देखता है। इसी प्रकार इन्सान का भी कर्त्तव्य है कि वह ख़ुदा तआला के साथ ऐसा संबंध पैदा करे कि ख़ुदा तआला उसका हर क़दम हर कार्य में मार्ग-दर्शन करे और सब चीज़ों से अधिक वह उसका प्रिय हो और सब बातों में वह उस पर भरोसा करने वाला हो और उसी कर्त्तव्य को पूरा करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम दुनिया में आए। उनका यह कार्य था कि वह दुनियादार लोगों को दीनदार (धार्मिक) बनायें, इस्लाम की हुकूमत दिलों में स्थापित करें और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फिर अपने रूहानी तख्त पर बैठाएं जिस तख़्त पर से उतारने के लिए शैतानी शक्तियाँ आन्तरिक एवं बाह्य आक्रमण कर रही हैं।

इसी उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सब से पहला कार्य यह किया कि मुसलमानों को छिलके की बजाए मग्ज़ (गूदा) की ओर ध्यान दिलाया और इस बात पर बल दिया की आदेशों का बाह्य भी बहुत अहम् और आवश्यक है परन्तु आन्तरिक की ओर ध्यान दिए बिना मनुष्य कोई उन्नति नहीं कर सकता। इसलिए आप ने एक जमाअत स्थापित की और बैअत की प्रतिज्ञा में यह शर्त निर्धारित की कि मैं दीन-धर्म को दुनिया पर प्राथमिक रखूँगा वास्तव में यही रोग था जो मुसलमानों को घुन की तरह खा रहा था,

इसके बावजूद कि दुनिया उनके हाथों से छूट चुकी थी फिर भी दुनिया ही की ओर उनका ध्यान जाता था। इस्लाम की उन्नति के मायने उनके नज़दीक बादशाहतों की प्राप्ति रह गया था और इस्लाम की सफलता के मायने उनके नज़दीक मुसलमान कहलाने वालों की शिक्षा और उनके व्यापार की उन्नति थी। हालाँकि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया में इसलिए नहीं आए थे कि लोग मुसलमान कहलाने लग जाएं, बल्कि आप लोगों को वास्तविक मुसलमान बनाने के लिए आए थे जिसकी परिभाषा पवित्र क़ुर्आन ने यह की कि

مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ (अलबक़रह – 113)

वह अपने सम्पूर्ण अस्तित्त्व को ख़ुदा तआला के लिए समर्पित कर दे। देखने में यह एक साधारण सी बात मालूम होती है परन्तु वास्तव में इस्लाम तथा अन्य धर्मों में यही अन्तर है। इस्लाम यह नहीं कहता कि तुम विद्या प्राप्त न करो, न यह कहता है कि तुम व्यापार न करो, न यह कहता है कि उद्योग और व्यवसाय न करो, न यह कहता है कि तुम अपनी हुकूमत की दृढ़ता की कोशिश न करो, वह केवल इन्सान के दृष्टिकोण को परिवर्तित करता है। दुनिया में समस्त कार्यों के दो दृष्टिकोण होते हैं। एक छिलके से मग्ज़ प्राप्त करने का दृष्टिकोण होता है और एक मग्ज़ से छिलका प्राप्त करने का दृष्टिकोण होता है। जो व्यक्ति छिलके से मग्ज़ प्राप्त करने की आशा रखता है आवश्यक नहीं कि वह अपने उद्देश्य में सफल हो जाए बल्कि प्रायः वह असफल रहता है परन्तु जो व्यक्ति मग्ज़ प्राप्त करता है उसको साथ ही छिलका भी मिल जाता है। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के अनुयायियों के समस्त प्रयास धर्म के लिए थे, परन्तु यह नहीं कि वह सांसारिक नेमतों से वंचित हो गए हों। यह तो एक स्वाभाविक बात है। जिन लोगों को धर्म

मिलेगा दुनिया दासी की तरह उनके पीछे दौड़ती आयेगी, परन्तु दुनिया के साथ दीन (धर्म) का मिलना आवश्यक नहीं। कभी वह नहीं मिलता। कभी रहा-सहा धर्म भी हाथों से जाता है।

तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने नबियों के मार्ग पर चलते हुए अल्लाह तआला के आदेश पर धर्म पर ज़ोर देना आरंभ किया। जिस समय आप प्रकट हुए मुसलमानों में दो प्रकार की तहरीकें जारी थीं। एक तहरीक यह थी कि मुसलमान कमज़ोर हो चुके हैं इसलिए उन्हें सांसारिक शक्ति प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। दूसरी तहरीक आप ने चलाई कि हम को धर्म की ओर ध्यान देना चाहिए। इस का अनिवार्य परिणाम यह होगा कि दुनिया अल्लाह तआला हमें स्वयं दे देगा।

कुछ लोगों ने ग़लती से यह समझा कि आप की तहरीक भी वैसी ही है जैसे आजकल के सूफ़ियों इत्यादि की तहरीक होती है कि वे प्रत्यक्ष तौर पर नमाज़ रोज़े पर ज़ोर देते हैं और अच्छे-भले आदमियों को एकान्त में बैठा कर पर्दे में रहने वाली स्त्रियों की तरह बना देते हैं। यदि आप ऐसा करते तो निस्सन्देह आप मग्ज़ के नाम से एक छिलके की प्राप्ति की तहरीक करते, परन्तु आप ने ऐसा नहीं किया। आप ने जहाँ धार्मिक आदेशों पर ज़ोर दिया कि धर्म अल्लाह की ओर से इसलिए आया करता है कि वह इन्सान के मस्तिष्क को चमक प्रदान करे और उस के मस्तिष्क को प्रकाशित करे तथा उसकी बुद्धि को तेज़ करे। आप ने कहा जो व्यक्ति सच्चे तौर पर धर्म पर अमल करता है और बनावट से काम नहीं लेता, धर्म उसके अन्दर उच्च कोटि के आचरण पैदा करता है, धर्म उसके अन्दर अमल करने की शक्ति पैदा करता है और धर्म उसके अन्दर, स्वार्थ-त्याग और कुर्बानी का माद्दः पैदा करता है आप ने फ़रमाया कि तुम धर्म को अपनाओ, तुम नमाज़ें पढ़ो, तुम रोज़े रखो, हज करो, ज़कात दो, परन्तु

वे नमाज़ें पढ़ो जो क़ुर्आन ने बताई हैं और वे रोज़े रखो जो क़ुर्आन ने बताए हैं और वह हज करो जो क़ुर्आन ने बताया है और वह ज़कात दो जो क़ुर्आन ने बताई है। पवित्र क़ुर्आन तुम से उठक-बैठक की मांग नहीं करता, न वे उनसे भूखे रहने की मांग करता है, न अपना देश बेफायदा छोड़ने की मांग करता है, न अपना माल गंवाने की मांग करता है। पवित्र क़ुर्आन तो नमाज़ के बारे में यह फ़रमाता है कि

اِنَّ الصَّلٰوۃَ تَنۡہٰی عَنِ الۡفَحۡشَآءِ وَ الۡمُنۡکَرِ وَ لَذِکۡرُ اللّٰہِ اَکۡبَرُ
وَ اللّٰہُ یَعۡلَمُ مَا تَصۡنَعُوۡنَ (अन्कबूत - 46)

नमाज़ तुम से अश्लीलता और अप्रिय बात त्याग करा देती है तो यदि वह परिणाम नहीं निकला जो पवित्र क़ुर्आन ने नमाज़ का बताया है तो तुम्हारी नमाज़ नमाज़ नहीं है और रोज़े के बारे में पवित्र क़ुर्आन फ़रमाता है कि لَعَلَّکُمۡ تَتَّقُوۡنَ (अलबक़रह – 184) रोज़ा इसलिए निर्धारित किया गया है ताकि तुम्हारे अन्दर संयम और उच्च कोटि के आचरण पैदा हों। तो यदि तुम रोज़े रखते हो बल्कि अपने आप को भूखा रखते और ख़ुदा तआला को तुम्हारा भूखा रहना अभीष्ट नहीं। और हज के लिए फ़रमाता है कि यह विद्रोह के विचारों को रोकने और आपसी झगड़ों को दूर करने का माध्यम है अतः हज बुराई, पाप और झगड़े को रोकने के लिए है। ज़कात के लिए फ़रमाता है-

خُذۡ مِنۡ اَمۡوَالِہِمۡ صَدَقَۃً تُطَہِّرُہُمۡ وَ تُزَکِّیۡہِمۡ بِہَا (अत्तौबः – 103)

ज़कात मनुष्य और क़ौम को शुद्ध करने तथा हृदय और विचारों के शुद्धिकरण के लिए निर्धारित की गई है। तो जब तक ये परिणाम पैदा न हों तुम्हारा हज और तुम्हारी नमाज़ केवल दिखावे की हैं। अतः तुम नमाज़ पढ़ो, रोज़ा रखो, हज करो, ज़कात दो, परन्तु तुम्हारी नमाज़ रोज़े तथा हज को मैं तब मानूंगा जब उनका परिणाम निकले और तुम

अश्लीलता और अप्रिय बातों से बचो तथा तुम्हारे अन्दर संयम (तक़्वा) पैदा हो और पापों तथा झगड़े से पूर्ण रूपेण दूर हो जाओ और मनुष्य एवं क़ौम की पवित्रता हृदय और विचारों की शुद्धता तुम को प्राप्त हो। परन्तु जिस व्यक्ति के अन्दर यह परिणाम पैदा नहीं होगा मैं उसे अपनी जमाअत में नहीं समझूंगा, क्योंकि उसने छिलके को ग्रहण किया मग्ज़ को ग्रहण नहीं किया जो ख़ुदा तआला का उद्देश्य था। इसी प्रकार शेष समस्त इबादतों के बारे में आप ने मग्ज़ पर ज़ोर दिया और फ़रमाया कि इस्लाम का कोई आदेश ऐसा नहीं जो हिकमत के बिना हो। ख़ुदा तआला आँखों को दिखाई नहीं देता। ख़ुदा तआला दिल को दिखाई देता है। ख़ुदा तआला को हाथों से नहीं छुआ जाता, ख़ुदा तआला को प्रेम से छुआ जाता है। तो धर्म का उद्देश्य यह नहीं कि वह केवल आँख और हाथ पर हुकूमत करे बल्कि जब भी वह आँख और हाथ पर हुकूमत करता है तो वह दिल और भावनाओं को साफ़ करने के लिए हुकूमत करता है ताकि वे शक्तियाँ इन्सान के अन्दर पैदा हों जिनसे वह ख़ुदा तआला को देख सकें और जिन से वे ख़ुदा तआला को छू सकें। और वे शक्तियाँ पैदा हों जिनसे वे ख़ुदा तआला की आवाज़ को सुन सकें। निष्कर्ष यह कि इन बातों पर ज़ोर देकर आप ने एक मार्ग इस्लाम की उन्नति के लिए खोल दिया और परिणाम यह हुआ कि यद्यपि एक छोटी सी जमाअत पैदा हुई परन्तु एक ऐसी जमाअत पैदा हो गई जिसने दीन (धर्म) को दुनिया पर प्राथमिक (मुक़द्दम) कर दिया और इस्लाम की रूहानी उन्नति तथा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूहानी बादशाहत की स्थापना के लिए हर प्रकार की क़ुर्बानी करना आरंभ कर दी।

आप लोग सोचें तो सही कि कहाँ अहमदियों की छोटी सी जमाअत और कहाँ समस्त मुसलमानों का विशाल गिरोह, किन्तु इस्लाम के प्रसार

और उसकी उन्नति के लिए जो कुछ अहमदिया जमाअत कर रही है कि शेष मुसलमान जो उन से हज़ारों गुना धार्मिक हैं उनसे आधा या चौथा भाग भी कर रहे हैं? तो यह परिवर्तन क्यों हुआ। इसीलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अहमदियों पर ज़ोर दिया था कि वे दीन (धर्म) को दुनिया पर मुक़द्दम (प्राथमिक) करें। यह वास्तविकता अहमदियों पर खुल गई तो उनके कर्म एक नए प्रकार के कर्म हो गए। एक सच्चे अहमदी की नमाज़ वह नमाज़ नहीं जैसी एक सामान्य मुसलमान नमाज़ पढ़ता है। शक्ल वही है वाक्य वही है परन्तु समझ और है। अहमदी नमाज़ को नमाज़ के लिए पढ़ता है और ख़ुदा तआला के साथ संबंध बढ़ने के लिए पढ़ता है। शायद कोई कहे कि क्या शेष लोग ख़ुदा तआला के साथ अपना संबंध बढ़ाने के लिए नमाज़ नहीं पढ़ते? मेरा उत्तर यह है कि हरगिज़ नहीं। यदि आप विचार करें तो आप को ज्ञात होगा कि इस समय मुसलमानों में दुर्भाग्य से यह विचार पैदा हो चुका है कि ख़ुदा तआला के साथ सीधे तौर पर संबंध पैदा हो ही नहीं सकता। मुसलमानों को सामान्य तौर पर यह ग़लती लग रही है कि न ख़ुदा तआला आज बन्दों से बोलता है और न बन्दे ख़ुदा तआला से कोई बात स्वीकार करा सकते हैं। एक सदी से अधिक समय गुज़रा है कि ख़ुदा के इल्हाम के उतरने से मुसलमान इन्कारी हो चुके हैं। निस्सन्देह इस से पहले मुसलमानों में वे लोग मौजूद थे जो ख़ुदा के कलाम उतरते रहने के क़ाइल थे, काइल ही नहीं वे इस बात के भी दावेदार थे कि ख़ुदा तआला उन से बातें करता है परन्तु एक शताब्दी से मुसलमानों पर यह आपदा उतरी है कि वे पूर्णतया ख़ुदा के कलाम के जारी रहने से इन्कारी हो गए, बल्कि कुछ उलेमा ने तो इस वास्तविकता की अभिव्यक्ति को कुफ़्र ठहरा दिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने आकर दुनिया के सामने

यह दावा प्रस्तुत किया कि मुझ से ही नहीं बल्कि जो व्यक्ति मेरा अनुकरण करेगा और मेरे पदचिन्हों पर चलेगा और मेरी शिक्षा को मानेगा और मेरी हिदायत को स्वीकार करेगा ख़ुदा तआला उस से भी बातें करेगा। आप ने निरंतर ख़ुदा के कलाम को दुनिया के सामने प्रस्तुत किया और अपने मानने वालों में तहरीक की कि तुम भी ख़ुदा तआला के इन इनामों को प्राप्त करने की कोशिश करो। आपने फ़रमाया –

मुसलमान पांच समय ख़ुदा तआला से यह दुआ मांगते है कि

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

(फ़ातिहा – 6,7)

हे ख़ुदा! तू हमें सीधा रास्ता दिखा उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने इनाम उतारे थे अर्थात् पहले अंबिया किराम।

फिर यह किस प्रकार हो सकता है कि उसकी यह दुआ सदैव के लिए व्यर्थ जाती और ख़ुदा तआला मुसलमानों में से किसी के लिए भी वह रास्ता न खोलता जो पहले नबियों के लिए खोला गया था तथा किसी व्यक्ति से भी उस प्रकार कलाम न करता जिस प्रकार पहले नबियों से कलाम करता था। इस प्रकार आप ने उस डेडलाक को पूर्णतया दूर कर दिया जो मुसलमानों के दिलों पर छाया हुआ था। मैं नहीं कहता कि हर अहमदी परन्तु मैं अवश्य कहता हूँ कि हर अहमदी जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उद्देश्य को पूर्ण रूप से समझ गया वह नमाज़ को इस प्रकार नहीं पढ़ता कि जैसे वह एक कर्त्तव्य अदा कर रहा है। वह नमाज़ को इस प्रकार पढ़ता है कि जैसे वह ख़ुदा तआला से कुछ लेने गया है। वह ख़ुदा तआला से एक नया संबंध पैदा करने के लिए गया है और इस इरादे के साथ जो व्यक्ति नमाज़ पढ़ेगा समझ में आ सकता है कि उसकी नमाज़ और अन्य लोगों की नमाज़ एक सामान नहीं

हो सकती। आप ने ख़ुदा तआला के संबंध पर इस सीमा तक ज़ोर दिया फ़रमाया कि मेरे दावे के मानने के लिए ख़ुदा तआला ने बहुत से तर्क दिए हैं परन्तु मैं तुम्हें यह नहीं कहता कि तुम उन तर्कों को सोचो और उन पर विचार करो। यदि तुम इन तर्कों पर सोचने और विचार करने का अवसर नहीं पाते या उसकी अवश्यकता नहीं समझते या यह समझते हो की शायद हामारी बुद्धि इन बातों के संबंध में फैसला करने में कोई ग़लती कर जाए तो मैं तुम्हें इस ओर ध्यान दिलाता हूँ कि तुम अल्लाह तआला से मेरे बारे में दुआ करो और ख़ुदा तआला से मार्गदर्शन चाहो कि यदि यह सच्चा है तो हमारा मार्ग-दर्शन कर और यदि यह झूठा है तो हमें इस से दूर रख। और फ़रमाया कि यदि कोई व्यक्ति सच्चे दिल से बिना द्वेष के कुछ दिन इस प्रकार की दुआ करेगा तो अल्लाह तआला अवश्य उसके लिए हिदायत का रास्ता खोल देगा और मेरी सच्चाई उस पर स्पष्ट कर देगा। सैकड़ों और हज़ारों लोग हैं जिन्होंने इस प्रकार कोशिश की और ख़ुदा तआला से रोशनी पाई। यह कितना बड़ा स्पष्ट तर्क है। इन्सान अपनी बुद्धि में ग़लती कर सकता है परन्तु ख़ुदा तो अपने मार्ग-दर्शन में ग़लती नहीं कर सकता और कैसा विश्वास है अपनी सच्चाई पर उस व्यक्ति को जो अपनी सच्चाई के पहचानने के लिए इस प्रकार के फैसले का तरीका दुनिया के सामने प्रस्तुत करता है। क्या कोई झूठा यह कह सकता है कि जाओ और ख़ुदा से मेरे बारे में पूछो? क्या कोई झूठा व्यक्ति यह सोच सकता है इस प्रकार का फैसला मेरे पक्ष में जारी होगा? जो व्यक्ति ख़ुदा की ओर से नहीं परन्तु इस प्रकार के फैसले के तरीके को मानता है वह तो जैसे अपने विरुद्ध स्वयं ही डिग्री दे देता है और अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ी मारता है। परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमेशा ही दुनिया के सामने यह बात प्रस्तुत की कि

अपने साथ हज़ारों तर्क रखता हूँ परन्तु मैं यह कहता हूँ कि यदि तुम्हारी इन तर्कों से तसल्ली नहीं होती तो न मेरी सुनो और न मेरे विरोधियों की सुनो। ख़ुदा तआला के पास जाओ और उस से पूछो कि क्या मैं सच्चा हूँ या झूठा हूँ। यदि ख़ुदा तआला कह दे कि मैं झूठा हूँ तो निस्सन्देह झूठा हूँ परन्तु यदि ख़ुदा तआला यह कहे कि मैं सच्चा हूँ तो फिर तुम्हें मेरी सच्चाई के स्वीकार करने से क्या इन्कार है।

हे प्रियजनो! यह फैसले का कितना सीधा और ईमानदार तरीक़ा था। हज़ारों लोगों ने इस से फ़ायदा उठाया और समस्त वे लोग जो फैसले के इस तरीके को अब भी स्वीकार करें उस से फ़ायदा उठा सकते हैं। इस फैसले के तरीके में वास्तव में यही हिकमत कार्य करने वाली थी कि आप समझते थे कि दीन (धर्म) दुनिया पर मुक़द्दम है। आप फ़रमाते थे ख़ुदा तआला ने भौतिक वस्तुओं को देखने के लिए आंखें दी हैं, भौतिक वस्तुओं को समझने के लिए बुद्धि प्रदान की है और भौतिक चीज़ों को दिखाने के लिए उसने अपना सूर्य पैदा किया है और सितारे पैदा किए हैं। फिर किस प्रकार हो सकता है कि रूहानी हिदायतों के दिखाने के लिए उसने कोई पथ-प्रदर्शन बनाया हो निस्सन्देह जब कभी भी कोई व्यक्ति उस से रूहानी चीज़ों को देखने की इच्छा करता है ख़ुदा तआला उसके लिए मार्ग खोल देता है। वह स्वयं पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है -

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ (अन्कबूत - 76)

जो लोग भी हमारे मिलने की इच्छा रखते हुए प्रयास से काम लेते हैं हम उनको अवश्य अपना मार्ग दिखा देते हैं।

सारांश यह कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम रखने का मार्ग अपनी जमाअत के लिए भी

खोला और अपने इन्कार करने वालों के सामने भी इसी मार्ग को प्रस्तुत किया। हमारा ख़ुदा एक जीवित ख़ुदा है। वह अब भी संसार के कारखाने को चला रहा है तथा धर्म की भी एक मोमिन के लिए आवश्यकता है कि वह अधिक से अधिक उस से संबंध पैदा करे और उसके निकट होता चल जाए और वह व्यक्ति जिस पर हिदायत प्रकट नहीं हुई उसके लिए आवश्यक है कि वह ख़ुदा तआला से ही रोशनी चाहे और उसकी ही सहायता से सच्चाई तक पहुँचने की कोशिश करे। तो असल कार्य और असल सन्देश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यही था कि वह दुनिया का सुधार करे और मानवजाति को फिर ख़ुदा तआला की ओर ले जाएँ और जो लोग ख़ुदा तआला के मिलने से निराश हैं उनके दिलों में ख़ुदा तआला की मुलाकात का विश्वास पैदा करें और इस प्रकार के जीवन से लोगों का परिचय कराएँ जो मूसा अलैहिस्सलाम तथा ईसा अलैहिस्सलाम तथा अन्य नबियों के युग में लोगों को प्राप्त था। हे परिजन! पुरानी किताबें पढ़कर देखो फिर स्वयं अपने पूर्वजों का इतिहास देखो क्या उन लोगों के जीवन भौतिक थे? क्या उनके कार्य केवल भौतिक उपायों से चलते थे? वे लोग ख़ुदा का प्रेम प्राप्त करने के लिए रात-दिन तड़पते थे और उनमें से सफल लोग ख़ुदा तआला के चमत्कारों तथा निशानों से हिस्सा पाते थे और यही वह जीवन था जो उनको अन्य क़ौमों के लोगों से विशेष करता था। परन्तु आज वह कौन सी विशेषता है जो मुसलमानों को हिन्दुओं, ईसाइयों तथा अन्य क़ौमों की तुलना में प्राप्त है? यदि कोई ऐसी विशेषता नहीं तो फिर इस्लाम की आवश्यकता क्या है? परन्तु वास्तविकता यह है कि ऐसी विशेषता है परन्तु मुसलमानों ने उसे भुला दिया। और वह विशेषता यह है कि इस्लाम में हमेशा के लिए ख़ुदा तआला का कलाम जारी है और हमेशा ही ख़ुदा

तआला के साथ सीधे तौर पर संबंध पैदा किया जा सकता है। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दानशीलता के यही तो मायने हैं। आप की दानशीलता के यह मायने तो नहीं हो सकते कि हम बी.ए. या एम.ए. की परीक्षा पास कर लें। क्या एक ईसाई बी.ए., एम.ए. नहीं होता। आप की दानशीलता के यह मायने तो नहीं है कि हमने कोई बड़ा कारखाना चला लिया है, क्या ईसाई, हिन्दू और सिक्ख ऐसे कारखाने नहीं चलाते। आप की दानशीलता के यह मायने तो नहीं कि कोई बड़ी व्यापारिक कोठी हम ने खोल ली और सुदूर देशों में हमने व्यापारिक कारोबार जारी कर दिया है। यह भी सब हिन्दू, ईसाई और यहूदी कर रहे हैं। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दानशीलता के यही मायने हैं कि आपके द्वारा इन्सान का ख़ुदा तआला के साथ सीधे तौर पर संबंध स्थापित हो जाए। इन्सान का दिल ख़ुदा तआला को देखे, उसकी रूह की उससे एकता हो जाए, वह उसका मधुर कलाम सुने और ख़ुदा तआला के ताज़ा से ताज़ा निशान तथा आयतें उसके लिए प्रकट हों। यह वह चीज़ है जिसमें मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुयायी अन्य क़ौम से विशेष हैं। इसी की ओर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुसलमानों को ध्यान दिलाया और यही चीज़ अपने न मानने वालों के सामने प्रस्तुत की कि ख़ुदा तआला ने यह खोया हुआ मोती मुझे दिया है और यह नष्ट हो चुका सामान मुझे प्रदान किया है और यह सब कुछ मुझे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कारण तथा आप के अनुकरण से मिला है और इस पद पर आप ही के वरदान ने मुझे पहुँचाया है। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से कार्य हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किए। परन्तु वे सब आंशिक हैसियत रखते हैं, यद्यपि बहुत अहम और महान है परन्तु मूल कार्य यही था कि आप

ने दीन धर्म को दुनिया पर मुकद्दम करने और भौतिकता पर रूहानियत को विजयी करने का कठिन कार्य प्रारंभ किया और निस्सन्देह इस्लाम को अन्य धर्मों पर विजय इसी मार्ग से होगी। हम तोपों और बन्दूकों से अपने देशों की प्रतिरक्षा भी करेंगे हम कुछ-कुछ शत्रुओं पर इस माध्यम से विजयी भी होंगे परन्तु समस्त संसार पर इस्लाम को जो विजय प्राप्त होगी वह इसी रूहानी तरीके से होगी, जिसकी ओर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ध्यान दिलाया है। जब मुसलमान मुसलमान हो जाएगा तब वह दीन को दुनिया पर मुकद्दम करने लग जाएगा, जब वह रूहानी (आध्यात्मिक) चीज़ों को भौतिक चीज़ों पर श्रेष्ठता देने लगेगा तो वह भोग विलास का जीवन जो इस समय पश्चिमी क़ौमों के कारण हमारे देश में जारी हो रहा है स्वयं ही मिट जाएगा और इन्सान किसी के कहने के कारण नहीं बल्कि अपने नफ़्स की इच्छा के अधीन व्यर्थ बातों को छोड़ देगा और संजीदा जीवन व्यतीत करने लग जाएगा और उसकी ज़ुबान में असर पैदा हो जाएगा तथा उसका पड़ोसी उसके रंग को ग्रहण करने लगेगा ईसाई, हिन्दू तथा अन्य धर्मों के लोग भी उसी प्रकार जिस प्रकार कि मक्का के लोगों ने कहा था ये कहना शुरू कर देंगे कि

(अलहिज्र – 3) لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ

काश वे मुसलमान होते और फिर होते-होते उनका यह कथन मक्का के लोगों की तरह अमल में बदल जाएगा और वे मुसलमान हो जाएंगे। क्योंकि कोई व्यक्ति अधिक देर तक अच्छी बात से दूर नहीं रह सकता। पहले दिलचस्पी पैदा होती है फिर लालच आता है, फिर कोशिश पैदा होती है और अन्ततः मनुष्य खिंचा खिंचा उस चीज़ की ओर आ ही जाता है। यही अब भी होगा। पहले इस्लाम मुसलमानों के दिलों में दाखिल होगा फिर वह उनके शरीर पर जारी हो जायेगा, फिर ग़ैर मुस्लिम लोग

स्वयं ऐसे कामिल (पूर्ण) मुसलमानों की नक़ल करने पर तैयार हो जाएंगे और दुनिया मुसलमानों से भर जाएगी तथा इस्लाम से आबाद हो जाएगी।

हे प्यारो! इस छोटे से लेख में मैं विस्तृत तर्कों को वर्णन नहीं कर सकता और अहमदियत के सन्देश के समस्त भागों को आपके सामने प्रस्तुत नहीं कर सकता। मैंने संक्षिप्त तौर पर अहमदियत का मतलब और उद्देश्य आप लोगों के सामने रख दिया है और मैं आप से दरख्वास्त करता हूँ कि इस लेख पर विचार करें और सोचें कि दुनिया में कभी-कभी धार्मिक तहरीकें केवल सांसारिक माध्यमों से विजयी नहीं हुईं। धार्मिक तहरीकें नफ़्स के सुधार, प्रचार और कुर्बानी ही के साथ हमेशा विजयी होती रही हैं। आदम अलैहिस्सलाम के युग से लेकर इस समय तक जो नहीं हुआ वह अब भी नहीं होगा और जिस माध्यम से आज तक ख़ुदा तआला के सन्देश दुनिया में फैलते रहे हैं उसी प्रकार अब भी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सन्देश दुनिया में फैलेगा। अत: अपनी जानों पर दया करते हुए, अपनी संतानों पर दया करते हुए, अपने खानदानों तथा अपनी क़ौम पर दया करते हुए, अपने देश पर दया (रहम) करते हुए ख़ुदा तआला के सन्देश को सुनने और समझने की कोशिश करें ताकि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल (कृपा) के दरवाज़े आप के लिए शीघ्र से शीघ्र खुल जाएँ और इस्लाम की उन्नति पीछे ना पड़ जाए। अभी बहुत काम है जो हमने करना है परन्तु उसके लिए हम आप के आने की प्रतीक्षा में हैं, क्योंकि ख़ुदाई उन्नतियाँ चमत्कारों के अतिरिक्त धर्म के प्रसार के साथ संबंध रखती हैं। आप आएँ और इस बोझ को हम सब मिलकर उठायें, जिस बोझ का उठाना इस्लाम की उन्नति के लिए आवश्यक है। निस्सन्देह कुर्बानी और स्वार्थ त्याग, निन्दा और अज़ाब इन सब चीज़ों का देखना इस मार्ग में आवश्यक है, परन्तु ख़ुदा तआला

के मार्ग में मृत्यु ही वास्तविक जीवन प्रदान करती है और उस मृत्यु को ग्रहण किए बिना कोई मनुष्य ख़ुदा तआला तक नहीं पहुंचा सकता और इस मृत्यु को ग्रहण किए बिना इस्लाम भी विजयी नहीं हो सकता। हिम्मत करें और मृत्यु के इस प्याले को मुंह से लगा लें ताकि हमारी और आपकी मृत्यु से इस्लाम को जीवन मिले और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का धर्म पुनः तरो ताज़ा हो जाए और इस मृत्यु को स्वीकार कर के हम भी अपने प्रियतम की गोद में अनश्वर जीवन का आनन्द प्राप्त करें! हे ख़ुदा स्वीकार कर।

ख़ाकसार
मिर्ज़ा महमूद अहमद
इमाम जमाअत अहमदिया
अक्टूबर 1948 ई
(अल्फ़ज़्ल 6 नवम्बर 1948 ई)